सदीनामा

ISSN : 2454-2121

सोच में इज़ाफे की पत्रिका

वर्ष-18 ❐ अंक-3 ❐ 1 से 31 जनवरी, 2018 ❐ पृष्ठ-16+8 ❐ R.N.I. No. WBHIN/2000/1974 ❐ मूल्य-5.00 रुपए

हम नेपाल के साथ थे, हैं और रहेंगे

नेपाल में भारी बहुमत पाकर वाम गठबन्धन सत्तारूढ़ होने जा रहा है। के.पी. ओली का प्रधानमंत्री बनना लगभग तय है। कयास इस बात के लगाये जा रहे हैं कि माधव नेपाल और प्रचण्ड में से एक देश का राष्ट्रपति बनेगा और दूसरा ने.क.पा. (ए.मा.ले) और ने.क.पा (माओवादी केन्द्र) के प्रस्तावित विलय के बाद अस्तित्व में आने वाली पार्टी का अध्यक्ष।

इस घटना-क्रम पर दो कोणों से विचार किया जाना चाहिए। पहला, राजनीतिक कोण और दूसरा विचारधारात्मक कोण। राजनीतिक दृष्टिकोण से देखें तो पूरे एशिया के परिदृश्य में इस घटना से, वस्तुगत तौर पर, कुछ सकारात्मक बदलाव आयेंगे। नेपाल में लम्बे समय बाद एक स्थिर सरकार बनने के बाद नेपाल ज्यादा सन्तुलित कूटनीति के द्वारा भारत और चीन में सन्तुलन स्थापित करेगा। अपने आर्थिक विकल्पों का विस्तार (मुख्यत: चीन की ओर) करके भारत पर अपनी निर्भरता को कम करेगा, भारतीय क्षेत्रीय विस्तारवाद का ज्यादा प्रभावी ढंग से मुकाबला करेगा और पिछले दिनो मधेस प्रश्न पर विवाद के दिनों में भारतीय नाकेबन्दी से पैदा हुई दुश्वारियों जैसी किसी स्थिति से निपटना उसके लिए आसान हो जाएगा। वैसे उस घटना का ही नतीजा था कि चीन के साथ नेपाल ने सम्बन्ध मजबूत करने शुरू किये और आज नेपाल का चीन के साथ व्यापार भारत के साथ व्यापार की तुलना में आगे निकल चुका है। नेपाल चीन की महत्वाकांक्षी 'वन रोड वन बेल्ट' परियोजना में भी शामिल हो चुका है। चीन के सहयोग से नेपाल में सड़क और रेल की अति महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के लिए बातचीत और सर्वेक्षण पहले ही शुरू हो चुका है। वाम गठबन्धन के नेपाल में बिजली उत्पादन में भारी बढ़ोत्तरी और भारी उद्योगों की अवस्थापना के लक्ष्य की पहले से ही घोषणा कर दी है। चीन के आर्थिक-तकनीकी सहयोग से इन लक्ष्यों को प्राप्त करना ज्यादा कठिन नहीं है। चीन से प्रतिस्पर्द्धा के कारण, आसान शर्तों पर सहयोग करना भारत की भी मजबूरी होगी और पहले की तर धौंसपट्टी का व्यवहार अब उसके लिए संभव नहीं हो सकेगा।

हालाँकि एशिया के पैमाने पर इस राजनीतिक घटना-क्रम का एक दूसरा पहली भी है। "बाजार समाजवाद" के मुखौटे वाला, उभरता हुआ चीनी साम्राज्यवाद पूरे एशिया के पैमाने पर तेजी से अपनी प्रभुत्व-विस्तार कर रहा है और इस मामले में भारतीय पूँजीवाद उसके मुकाबले कहीं नहीं ठहरता। 'वन बेल्ट वन रोड प्रोजेक्ट' दक्षिण चीन सागर पर एकछत्र प्रभुत्व का दावा, श्रीलंका में हम्बनटोटा और पाकिस्तान में ग्वादर जैसे बन्दरगाहों का निर्माण (म्यांमार के साथ भी ऐसी ही परियोजना पर बात जारी है।) ईरान और मध्य-एशियाई देशों के साथ घनिष्ठ व्यापार-सम्बन्ध आदि चीनी महत्वकांक्षा के संकेत मात्र हैं। नेपाल में भी चीन कोई 'सांता क्लाज' बनकर नहीं आ रहा है। उसकी निगाह नेपाल की सस्ती श्रम-शक्ति और सस्ते कच्चे माल के अकूत भण्डार पर है। यही नहीं, पूँजीवाद विकास के गति पकड़ने और मुद्रा-अर्थव्यवस्था के मजबूत होने के बाद नेपाल चीनी उत्पादों का एक बड़ा बाजार होगा।

एक तरह, *नेपाल दूरगामी तौर पर ज्यादा गहरे साम्राज्यवादी शोषण और देशी पूँजीवादी शोषण की गिरफ्त में जकड़ जाएगा। लेकिन वस्तुगत रूप से, नेपाल इतिहास की यात्रा में आगे कदम बढ़ा देगा, क्योंकि वहाँ पूँजीवादी विकास और नये सिरे से पूँजीवादी*

शेष पृष्ठ 22 पर

काली बोली, हैट लगा लो

दरभंगा नरेश का बुत रहता कलकत्ते में
बंग-जागरण में भागीदारी के किस्से
निपट गये हैं सस्ते में
हम को सब अब तक कहते हैं–
हिन्दुस्थानी, हिन्दुस्थानी
सौ में दस का रेट लगा लो
काली बोली, हैट लगा लो

क्रान्ति ओढते, क्रान्ति कराते, क्रान्ति बिछाते
बिन दहेज के ब्याह न करते, सूत जनेउ छोड़ न पाते
तुम हो नकली, हम हैं असली
असली-नकली, नकली असली

इन पर भी कुछ चैट करा लो
काली बोली, हैट लगा लो

हमको अपनी मूरखता से बहुत प्यार है।
हम मुद्दे पर राय हमारी आर पार है।
हम तक नहीं पहुँच पायेंगे, बड़के बाबू
हरा, गेरूआ, काला या फिर लाल लगा लो
काली बोली, हैट लगा लो

बंगाले में जातिवाद है, दुर्गा माई नहीं बताती
प्रगतिशीलता टुकड़ों में अस्तित्व छिपाती
माइक अगर बोलता तो सब कुछ कह देता
इनको रोको या फिर मुझको सैट करा लो
काली बोली हैट लगा लो

जितेन्द्र जितांशु

संपादक मण्डल

उप-संपादक : **तितिक्षा तथा पापिया भट्टाचार्य**
संपादकीय सलाहकार: **यदुनाथ सेउटा**
संपादक : **जितेन्द्र जितांशु**
विशेष सहयोग : **आरती चक्रवर्ती, एच॰ विश्ववाणी तथा राजेन्द्र कुमार रुईया (अमेरिका) सभी अवैतनिक हैं।**

पत्राचार का पता :

सम्पादक - सदीनामा
48/49A, Swiss Park, Kolkata-700 033
West Bengal. India ☎ : 9231845289
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

सीमाएं

अनिता मिश्र (तितिक्षा), सम्पादकीय सलाहकार, सदीनामा

सीमाएं नहीं हैं बाधा
नहीं होती कोई सीमा
संबंधों, भावनाओं, खुशियों
जीवन-मरण या सुख-दुख की
हम हो भूटानी या बंगाली
बोलें नेपाली या पंजाबी
पर क्या नहीं धड़कता हममें
रक्त इंसानी.....
बाँट तो दिया हमने मिट्टी को,
बना दिया, पूर्वी-पश्चिमी, उत्तरी या दक्षिणी
परन्तु नहं बदल पाए इंसानी प्रेम, क्रोध, घृणा, द्वेष
आज भी भूकम्प में हिलती या बाद में लिपटी मिट्टी में
कोई नेपाली या गुजराती या जापानी घायल होता है
दुखी बेचैन हर इन्सान होता है
जब भी प्रताड़ित होती है कोई पाकिस्तानी या बांग्लादेशी
हर भारतवासी शर्मिंदा होता है।
सीमाएं नहीं हैं बाधा
इंसानी भावनाओं की नहीं होती कोई सीमा।
बंधन, धर्म, मजहब या परंपरा
नहीं बाँट सकते हमें
ना टुकड़े कर सकते हैं
जो सौंदर्य नेपाली वधु में है
भूटानी-बांग्लादेशी चीनी-जापानी या हिन्दुस्तानी में भी है।
मातृत्व का सुख, प्रियजनों से विछोह
वर्षा के स्पर्श का रोमांच, धूप की चुभन,
दूर परदेश में बैठे अपनों की याद
कोशी, ब्रह्मपुत्र, गंडक, गंगा–
घीमाल, द्रुपका, संथाली, ईंगीलोप
सेथो गुंगा फुलका हामी, द्रुक सेंदेन
जन-गण-मन, आमार सोनार बांग्ला,
क्या ये सच नहीं...
हम अब भी जीवित हैं, शेष हैं
मर नहीं सकता जीवन
इसलिए मर नहीं सकती संवेदनाएं
कुछ लोग नहीं मार सकते
असंख्य आवाजों को
हम जीवित थे.... अब भी हैं।
इंसानी जीवन अब भी शेष है
इंसानियत भी सेश हैं।
सीमाएं नहीं हैं बाधा इंसानियत की नहीं होती कोई सीमाएं।

मासिक काव्य गोष्ठी सम्पन्न

रविवार को तिरंगा अगम काव्य संगम (स्व० अगम जी) की मासिक काव्य गोष्ठी प्रसिद्ध समाजसेवी एवं राष्ट्रीय बिहारी समाज के अध्यक्ष श्रीमणि प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में काशीपुर स्थित आदर्श युवक संघ (आयुस) के संयुक्त तत्वावधान में आयुस भवन सभागार में आयोजित की गई। इस अवसर पर वदूद आलम अफ्फाकी मुख्य अतिथि थे। गोष्ठी का संचालन श्री विश्वजीत शर्मा ने किया। इस अवसर पर काव्यपाठ करने वाले कवि एवं शायर : यदु नंदन प्रसाद 'अशांत' मीनाक्षी सांगानेरिया, शम्भूलाल जालान "निराला", पंकज कुमार शर्मा, प्रदीप कुमार धानुक, शमीम सागर, युसूफ अख्तर, नूर अशरफी, डॉ० जमील हैदर "शाद", मो० चाँद, रिजवान गोरखपुरी, जितेन्द्र जितांशु, सोहेल खान सोहेल, नवीन कुमार सिंह, सईद आजर, रणविजय श्रीवास्तव, डॉ० ब्रजमोहन सिंह, दिनेश चन्द्र प्रसाद 'दीनेश' सरवर दिलकश, रामनाथ यादव 'बेखबर', जतिब हयाल, सागर चौधरी, प्रवेश पटियालवी एवं अनेक।

यह रपट शम्भूलाल जालान ने लिखी।

सरयू

–फातिमा कनीज

सरयू
मत रोओ
बीत गये कलंक के २५ साल
बीत जायेंगे शायद और २५ साल
पता नहीं कब मिलेगी सजा
उन अपराधियों को
जिनने तोड़ी बाबरी मस्जिद
सरयू
तुम्हीं बताओ ना
क्या तुमने देखा था
राम को अयोध्या में जन्म लेते या
अयोध्या से उन्हें वन जाते
पर सरयू
तुम्हारे गिरते आँसू
बताते हैं कि
छः दिसम्बर १९९२ को
इसी अयोध्या में ढहा दिया
असभ्य व बर्बरों ने बाबरी मस्जिद को
सरयू
मत रोओ?!

शहादत

–श्रेया जायसवाल

शहीद तुम्हारे नारे
जुलूस में अभी भी गूंजते हैं
तुम नहीं हो
पर तुम्हारे नारे जुलूस में हैं
लड़ते रहे आखिरी सांस तक
शासन के पहरेदारों ने
खूब बरसाई लाठियां, चलायी गोलियां
फिर भी दब नहीं पायी
तुम्हारी आवाज
अब तुम नहीं हो तो क्या
तुम्हारे सपने, तुम्हारे विचार
जीवित हैं हमारे साथ
और हमारी वाणी में तुम जीवित हो
हमारा प्रतिबद्धता बढ़ायेगी तुम्हारे संघर्ष को
है यह वादा हमारा तुम्हीं से
सच-सच कहता हूँ, सच बतलाता हूँ
जैसे तुम भगतसिंह को महसूस करते थे
वैसे हम तुम्हें भी महसूस करते हैं
तुम्हारा हंसता हुआ चेहरा
तुम्हारी शहादत को याद दिलाता है
सचमुच शहादत नहीं होती है व्यर्थ!!

जिन्दगी

–करूणा गुप्ता

जिन्दगी जो भी
दिया तुमने खूब दिया
जितना करूँ तारीफ
कम है तेरी
दो पल का हँसना,
दो पल का रोना
तू भी क्या खूब है – जिन्दगी?!
न जी भर कर हँसने देती,
न जी भर कर रोने देती
तू भी क्या खूब है-जिन्दगी?!
चल तू भी क्या याद रखेगी
जी लेते हैं
तेरे रास्ते पर
कम से कम तुझको
कोई शिकायत न रहे।
तू भी क्या खूब है– जिन्दगी?
तू भी क्या खूब है जिन्दगी!

जनवादी लेखक संघ, पश्चिम बंगाल सातवाँ राज्य सम्मेलन
शिशिर सेन नगर, 24 दिसम्बर 2017
55, सूर्य सेन नगर, कोलकाता-9, 24 दिसम्बर 2017
राजनैतिक सांगठनिक रिपोर्ट में मिली कविताएँ

सदीनामा के सभी पाठकों, शुभेच्छुओं व सहयोगियों को
नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

हल्दीघाटी युद्ध

हल्दीघाटी की लड़ाई का ऐतिहासिक महत्व है यहाँ हम हल्दीघाटी का रणनीतिक आंकलन कर रहे हैं। भविष्य में अन्य युद्धों का आंकलन करेंगे। अगर आपके पास कोई युद्ध साहित्य सामग्री हो तो सम्पर्क करें।– सम्पादक, 9231045289/www.sadinama.in

चित्तौड़ के पतन के बाद अनेकों राजपूत राजाओं ने एक-एक करके अकबर के सामने हथियार डाल दिए और कुछ ने अपनी राजकुमारियों के विवाह मुगलों के साथ करके उनसे अपने सम्बन्धों को पक्का बना लिया। लेकिन राणा प्रतापसिंह जब तक जीवित रहा, उसने मेवाड़ के घराने की परम्परा को ऊँचा रखा। अकबर अपने साम्राज्य के हृदय में चुभे इस कांटे को सहन नहीं कर सकता था। उसने अम्बर के कुंवर मानसिंह के अधीन एक सेना भेजी। मानसिंह ने आसफखां, गयासुद्दीन, राय लोनकरण, गाजी खां बदख्शा, राजा जगन्नाथ, सैयद अहमदखां, मेहतरखां, और अन्य प्रसिद्ध सेनापतियों और राजाओं के साथ 3 अप्रैल 1576 को अजमेर से कूच किया, जहाँ अकबर ने व्यक्तिगत रूप से आकर उसे विदा किया। अपनी 4,000 घुड़सवारों की सेना के साथ मानसिंह मंडलगढ़ पहुँचकर वहाँ दो महीने तक टिका। जब प्रताप ने देखा कि मुगल उसके विरुद्ध युद्ध की तैयारी कर रहे हैं, तो वह कुम्भलगढ़ के किले से निकलकर पहाड़ियों के बीच स्थित सुरक्षित स्थान लोहसिंग में आ गया। यह जगह हल्दीघाटी की संकरी घाटी से लगभग 12 किलोमीटर दूर है। उसकी सेना में लगभग 3,000 घुड़सवार, 2,000 पैदल और 100 हाथी थे। कहा जाता है कि कुछ हल्की तोपें भी उसके साथ थीं। ठोस बदन और तेज चलने वाले भील मेवाड़ की पैदल सेना के प्रमुख अंग थे। पहाड़ी युद्ध के लिए वे आदर्श सैनिक थे, क्योंकि उनके पास तीर-कमान और तलवारों जैसे हल्के हथियार थे। मानसिंह अब आगे बढ़ा और उसने हल्दीगाटी के दर्रे के सामने बनस नदी के किनारे डेरा डाल दिया।

मुगलों को पास आते देखकर राणा प्रताप ने दर्रे की तंग गली के दोनों ओर अपनी सेना को लगा दिया। यह पूरा इलाका पहाड़ी था और घने जंगलों से ढंका था। युद्ध के लिए यहाँ कठिनाई से ही स्थान था। इस जमाने में यह मार्ग इतना संकरा था कि दो सवार बराबर-बराबर मुश्किल से ही उसमें से गुजर सकते थे। आज एक सड़क दर्रे में से होकर जाती है और जंगल का वहाँ निशान भी नहीं है। राणा ने परम्परागत तरीके से अपना मोर्चा जमाया। उसके अधीन कुछ मुसलमान भी थे और हाकिम सूर पठान अन्य राजपूतों के साथ मोर्चे के सबसे महत्वपूर्ण हिस्से हरावल की कमान संभाल रहा था। दाहिने बाजू– दक्षिण पार्श्व–ग्वालियर के राजा रामशाह के अधीन था और बायां बड़ी सदरी के झाला बीदा और मानसिंह सोनागरा के साथ मानसिंह झाला के अधीन था। पृष्ठ भाग राणा पंजा, पुरोहित गोपीनाथ और जगन्नाथ की कमान में था। राणा स्वयं केन्द्र में स्थित था।

कुंवर मानसिंह ने राजा जगन्नाथ, आसिफखां और गयासुद्दीन को अग्रिम मोर्चे पर लगाया। उसका दाहिना बाजू सैयद अहमदखां के अधीन रहा, जबकि बायें की कमान गाजीखां बदख्शा और राय लोनकरण ने संभाली। पृष्ठ में मेहतर खाँ रहा और रिजर्व सेना माधोसिंह के हाथ में रही। मुगलों के पास श्रेष्ठतर तोपखाना था और कुछ छोटी तोपें भी थीं। मानसिंह ने अपनी फौंजे पहाड़ियों के भीतर डाल दी और बादशाह बाग पर शिविर लगाया यह जगह चारों ओर खड़ी पहाड़ियों के बीच एक छोटे कटोरे की तरह हैं। 21 जून को जब बहुत तेज गर्मी पड़ रही थी और हवा लपटों की तरह लग रही थी, राणा ने ऊँचाई के सुरक्षित ठिकानों से हमला किया और पहली मुठभेड़ में उसकी हरावल ने मुगलों को पराजित कर दिया। अपनी इस सफलता से साहसिक बनकर प्रतापसिंह ने बहुत गलती कर डाली और पहाड़ियों की अपनी स्थितियों को छोड़कर आगे बढ़ आया। हाकिम सूर के नेतृत्व में उसके अग्रिम दल ने,

–साभार भारतीय सेना और युद्ध कला प्राचीन काल से आज तक
ले०कर्नल गौतम शर्मा
राजपाल एण्ड संस,
कश्मीरी गेट,
दिल्ली-110006

जो पहले ही अच्छी सफलता प्राप्त कर चुका था, अब मानसिंह के केन्द्र और दाहिने बाजू पर भयानक आक्रमण किया। उसके दाहिने बाजू ने भी जोरदार हमला बोला और राय लोनकरण सिंह सिर पर पैर रखकर भागा। जो लड़ाई अब चली उसके फलस्वरूप मुगलों को पीछे हटने पर मजबूर होना पड़ा। आसिफखां ने अपनी तोपों से भारी गोलाबारी की और अपनी ओर से कितने ही लोगों को हताहत होने से बचा लिया। प्रतापसिंह अब तक विजय प्राप्त कर रहा था।

मुगलों ने अब अपना मोर्चा पहाड़ियों से बाहर नीचे मैदानों में बनस नदी के किनारे उस जगह लगाया जिसे रक्त तलाई कहते हैं। मुगलों के दाहिने बाजू ने सैयद अहमदखां के नेतृत्व में वीरतापूर्वक युद्ध लड़ा और वह डटा रहा। जो भयानक युद्ध अब हुआ उसमें लगा की राजपूत जीत जाएंगे। अत: मेहतरखां को आदेश दिया गया कि वह सामने के दबाव को कम करने के लिए पीछे से आगे आ जाए। दब वह आगे की ओर बढ़ा तो उसके आदमियों ने जोर-जोर से युद्ध के नारे लगाए और यह बात फैला दी कि स्वयं सम्राट ही युद्ध के मैदान में आ गए हैं। इस खबर ने मुगलों में नए प्राण फूंक दिए। ताजे दस्तों से पुष्ट होकर उन्होंने अब ठोस मोर्चा बना लिया। अब हुए युद्ध में दोनों ओर से लोग बड़ी संख्या में हताहत हुए। युद्ध की गर्मी में मानसिंह अग्रिम पंक्ति की ओर बहुत आगे तक बढ़ आया। राणा भी अपने प्रसिद्ध घोड़े चेतक पर चढ़कर आगे आ गया। राणा का हाथी घायल हो चुका था और उसे छोड़ना पड़ा था। मौका पाकर प्रताप सिंह ने हाथी पर बैठे मानसिंह पर भाले से वार किया। वार खाली गया। भाले ने बदले में महावत को बींध डाला। अपने सेनापति को खतरे में देखकर मुगलों ने राणा को चारों ओर से घेर लिया। उसका घोड़ा बुरी तरह घायल हो चुका था और उसके लिए भारी संकट पैदा हो गया था। इसी समय झाला उसके बचाव के लिए आया। उसने राणा के छत्र को अपने ऊपर ले लिया, जिससे कि सभी हमले उसके ऊपर हों। उसने राणा से चले जाने का अनुरोध किया। प्रतापसिंह अपने घायल घोड़े को लेकर युद्ध-भूमि से चला गया। अपने नेता को जाते हुए देखकर, मुगलों के भारी दबाव के नीचे बिखर कर, राजपूत पीछे हट गए। दोपहर तक मानसिंह एक निर्णायक विजय प्राप्त कर चुका था। वह पीछा करने के लिए दल नहीं भेज सका, क्योंकि शाही सेनाएं बुरी तरह थक चुकी थीं। प्रसिद्ध इतिहासकार बदूनी युद्धभूमि में मौजूद था और अग्रिम दल में शामिल था। उसने मृतकों की संख्या 500 दी है, जिसमें 120 मुसलमान थे। उस दिन राजपूतों के सर्वश्रेष्ठ रक्त ने हल्दीघाटी की युद्ध भूमि को सींचा।

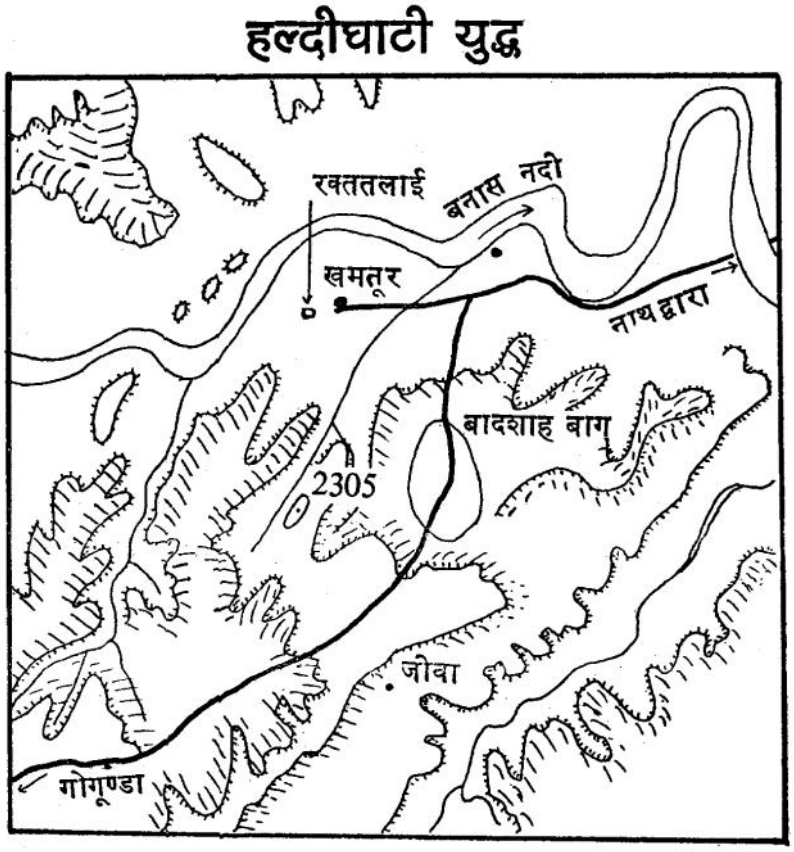

बहुत पहले से इस युद्ध को बहुत विशिष्ट माना जाता रहा है और इसे मेवाड़ का थर्मोपली कहा जाता रहा है। अकबर ने राणा प्रताप को हराने के लिए अपने विश्वस्त सेनापति मानसिंह को भेजा

था, लेकिन उसने इस विजय को बहुत उल्लेखनीय नहीं माना। जब मानसिंह दरबार में वापस पहुँचा तो सम्राट ने उसका स्वागत तक न किया। इससे प्रकट है कि अकबर को अधिक बेहतर परिणामों की आशा थी। युद्ध शुरू होने के समय राणा की स्थिति बहुत ही उत्तम था और वह पहली मुठभेड़ों में विजय प्राप्त कर चुका था। लेकिन उसे पहाड़ियों में सामरिक दृष्टि से मजबूत अपनी स्थिति को छोड़कर नीचे नहीं आना चाहिए था। जहाँ वह था वहीं रहकर, बिना अधिक कठिनाई के वह मुगल सेना का पूरा सफाया कर सकता था। मुगलों का अधिकांश बाग बादसाह बाग में था। राणा को उनके पृष्ठ को काटकर उन्हें सब तरफ से घेर लेना चाहिए था और तब ऊँचाई से आक्रमण करना चाहिए था। लगता है, आरम्भिक मुठभेड़ों के बाद सेना पर से उसका नियंत्रण खत्म हो गया और छोटे सेनापति, जो उन्हें सूझा, वही करते गए। आरम्भिक मुठभेड़ और बाद में बादशाह बाग के युद्ध ने राजपूतों को इतना थका दिया कि जब रक्त तलाई पर अन्तिम शक्ति परीक्षा हुई तो वे बहुत बढ़िया नहीं लड़ सके। उस नाजूक मौके पर राणा का युद्धभूमि से चले जाना एक और गलती थी। उसकी सेना खुली जमीन पर लड़ने के लिए मुगलों से जितनी तैयार नहीं थी। मुगलों ने अपने तोपखाने के प्रभावी इस्तेमान से राजपूतों के हमलों की कमर तोड़ दी और अन्तिम दौर में रिजर्व सेना के नियोजन ने लड़ाई का फैसला कर दिया। अकबर मानसिंह की सफलता से सन्तुष्ट नहीं रहा। वह स्वयं पहाड़ियों में आगे बढ़ा और उसने 11 अक्टूबर 1576 को गोगुंडा पर अधिकार कर लिया। वह वर्ष के अन्त तक मेवाड़ में रहा, पर कोई उल्लेखनीय सफलता प्राप्त नहीं कर सका।

अगले शिक्षावर्ष से पास-फेल वापस लाने की सरकारी घोषणा राज्यवासी के लम्बे आन्दोलन की जय

एस यू सी आई (सी) पश्चिम बंगाल राज्य सचिव कॉमरेड सौमेन बसु 24 नवम्बर एक प्रेस विज्ञप्ति में बोलें–

आज पश्चिम बंगाल विधानसभा में राज्य के शिक्षा मंत्री माननीय श्री पार्थ चट्टोपाध्याय घोषणा किये हैं, इस राज्य में स्कूल स्तर से पास-फेल प्रथा आनेवाले शिक्षावर्ष से चालू होगा। हमलोग इस घोषणा का स्वागत करते हैं एवं पश्चिम बंगाल के सभी स्तर की जनता इसे लम्बे आन्दोलन की महत्वपूर्ण जीत मानती है।

प्राथमिक स्तर से पास-फेल प्रथा जब सी पी एम सरकार द्वारा हटाया गया था तब हमारी पार्टी एस यू सी आई (सी) के नेतृत्व में इस राज्य में जनआन्दोलन चलता रहा, जो तृणमूल सरकार के शासन में भी समान रूप से परिचालित हुआ है। इसी मांग पर अंत में पिछले 17 जुलाई को पश्चिम बंगाल में 12 घंटा का बंद बुनाया गया था जिसके पक्ष में व्यापक जन समर्थन को देखते हुए राज्य के शिक्षामंत्री घोषणा किये थे कि अगले वर्ष से पास फेल वापस लाएंगे। पास-फेल प्रथा नहीं होने के कारण इस राज्य के करोड़ों गरीब-मध्यमवर्गीय छात्र-छात्राओं के शिक्षा का विनाश हुआ। जनता की पहली कक्षा से ही पास फेल चालू करना होगा।

– यह जानकारी एस यू सी आई (कम्युनिष्ट) पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी की ओर से कामरेड मानव बेरा ने दी।

मो० 9433457084

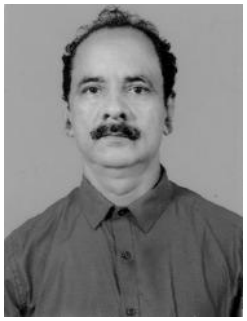

नववर्ष, मकर संक्रान्ति, सरस्वती पूजा, नेताजी जयन्ती और गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

श्री भूपेन्द्रनाथ पाण्डेय

संयोजक बंगाल : अन्तर्राष्ट्रीय भोजपुरी हिन्दी परिषद, अन्तर्राष्ट्रीय ब्राह्मण संगठन

ग्राम - औरा, इलाहाबाद (उ०प्र०), मोबाइल : 9239535426

कहानी

धोखे को धोखा

सूर्यकान्त पाण्डेय
मिर्जापुर (उ०प्र०)
मो० 9831777415

छुट्टी के दिनों में लोकल ट्रेनों में कम भीड़ रहती है खासकर रविवार को। मैं भी दोपहर की ट्रेन में बैठा था गाड़ी छूटने में 10-15 मिनट की देर थी। मुझे नींद आने लगी थी तभी एक परम कारुणिक आवाज "बाबूजी भिक्खा दीन, भिक्खा दीन" सुनाई दी तो एकाएक नींद खुल गई। सीट के बगल में एक 60-62 साल की महिला खड़ी थी। मैंने ध्यान से देखा, देखने में भिखारियों से भिन्न थीं। मुझे ध्यान से देखता हुआ देखकर वो आगे बढ़ गई। इन्सान का काम भूल जाता है, चेहरा बदल जाता है पर एकमात्र नहीं बदलती तो आवाज, आवाज मुझे जानी पहचानी या कभी सुनी हुई महसूस हो रही थी पर यह समझ में नहीं आ रहा था कि ये आवाज कहाँ सुनी थी या इनके किसी खास अपने की आवाज से मिल रही है जिसको मैं जानता हूँ। मैं इसी उधेड़-बुन में लगा था कि अगला स्टेशन आ गया वो उतर गयी तथा दूसरी बोगी में चली गयी। मैं इस महानगरी में सैकड़ों भिखारियों को रोज देखता हूँ सुनता हूँ पर आज जैसा इस महिला भिखारिन ने मुझे जितना प्रभावित किया उतना किसी ने नहीं किया। मैंने मन में ठान लिया कि जैसे भी हो मैं इसके बारे में पता लगाऊँगा। इतना तो सच है कि ये समय की मारी हुई है। दिन बीतते गये मैं भूलता जा रहा था हठात एक दिन वो महिला सब्जी की दुकान पर खड़ी थी और सब्जी वाला उसको सब्जी देकर पैसा नहीं लिया और वो चली गई। मैं भी सब्जी लिया और सब्जी वाले से उस महिला के बारे में पूछा, तो उसने जो कहानी बताई कि मेरे रोंगटे खड़े हो गये।

ये महिला एक बैंक कर्मचारी की पत्नी थी इनकी एक बेटी थी, इनके पति कुछ समय पहले ही मर गये थे, बेटी की शादी उन्होंने ही कर दिया था। दामाद भी इनके ही घर पर रहता था पर समय ने करवट ली एक दिन सड़क दुर्घटना में उनकी बेटी भी इस आसार संसार से विदा हो गई। कुछ दिन तक तो सब ठीक चल रहा था पर इनके दमाद ने दूसरी शादी कर ली और दूसरी पत्नी को भी इनके ही घर में रहने लगा। महीना दो महीना बीतते-बीतते रोज घर में झमेला होना शुरू हो गया अपना घर ये पहले ही अपने बेटी के नाम लिख चुकी थीं एक दिन इनका दामाद इनके गैरहाजिरी में चुपके से वो मकान की बिक्री कर दिया एवं अपना परिवार लेकर कहीं चला गया उनको कुछ पता नहीं। लौटकर आने के बाद घर बिकने की कहानी सुनकर इनके हाथ-पाँव कांपने लगी, जमीन पर गिर पड़ी जब होश आया तो गली में पड़ी थी। रिश्तेदारों के यहाँ रहना शुरू किया पर दस-पाँच दिन के बाद सबने आगे का रास्ता पूछना शुरू कर दिया। पाँच-सात महीना इसी तरह बीता पर अन्त में इन्होंने सब मान-सम्मान त्यागकर जीवनयापन हेतु यही रास्ता चुना। रहने के लिए फुटपाथ, जीविकोपार्जन के लिए रेलयात्रा यही इनकी दिनचर्या है। हाँ एक बात है कि ये बताती हैं कि ये इतना ही भिक्षा मांगती है जितने में इनका दिन भर का खर्च चल जाता है। दूसरे दिन की इनको चिन्ता नहीं रहती है, अब इन्होंने जीवन से समझौता कर लिया है। पर आप इनके बारे में जानना क्यों चाहते हैं क्या आप इनके परिचित हैं सब्जी वाले ने पूछा। नहीं भाई ऐसे ही इनकी आवाज जानी पहचानी लग रही थी इसीलिए। मैंने कहा, ये हमारे यहाँ रोज आती हैं पर समय निश्चित नहीं हैं, मैं इनसे पैसा नहीं लेता अपने समय में इन्होंने मेरी बहुत मदद की थी। उनका बदला तो मैं नहीं चुका सकता पर इसी बहाने जो थोड़ा बहुत मदद हो सकता है कर देता हूँ। मैं भी संसारी मानुस हूँ किसी तरह दो वक्त की रोटी चल जाती है। सब्जी वाले ने कहा। कुछ दिन बाद वो पुन: मुझे यात्रा के समय लोकल ट्रेन में मिली। आज मैंने जेब में हाथ डाला और सौ रुपये की नोट हाथ में पकड़ा दिया। महिला ने अपने भिक्षा कै पैसे गिने एवं तीन रुपये वापस कर दिये। मैंने कहा आप पूरे ले लें मुझे बाकी नहीं चाहिए। नहीं बेटे मैं उतना ही लेती हूँ जितने में मेरा दिन भर का खर्च चल जाता है। तो मैं अगर आपको एक महीना का खर्च दे दूँ तो अपा भिक्षा एक महिना तक नहीं मांगेगी मैंने पूछा। अगल-बगल के सहयात्री मुझे भौचक्की निगाहों से देख एवं सुन रहे थे। वो महिला चुपचाप खड़ी होकर मुझे देख रही थी। अगला स्टेशन आने वाला था मैं जानता था ये महिला अगले स्टेशन पर उतर जायेगी मैं भी उतरने के लिए तैयार

हो गया गाड़ी खड़ी हुई वो भी उतरी मैं भी उतरा। उतरते ही मैंने उनसे पूछा आप परिचित लग रही हैं अपने बारे में बताने का कष्ट करेंगी शायद मैं आपकी कुछ मदद कर सकूं उन्होंने अपनी कहानी शुरू कि, बेटा मैं मूलत: तुम्हारे ही प्रदेश या यों कहो की तुम्हारे ही यहाँ की निवासी हूँ। जो कि तुम्हारे बोली से समझ में आ रहा है, अब वहाँ पर न तो यहाँ पर न तो मेरा कोई है जिस पर विश्वास किया उसीने धोखा दिया शेष तुमको क्या बताऊँ पूर्व जन्म का पाप भोगना है भोग ले रही हूँ। कहते कहते उनके आँखों से आंसुओं की धारा बहने लगी। मैंने उनसे कहा क्या मैं आपसे एक याचना कर सकता हूँ, उन्होंने प्रश्नवाचक निगाहों से मेरी ओर देखा, मैंने कहा आप हमारे यहाँ चलें, और मेरी माँ बनकर रहें, मैं बचपन में ही अपनी माँ खो दिया था शायद उस रूप में मैं आपको पाकर अपने को सौभाग्यशाली समझूंगा।

"नहीं ऐसा नहीं हो सकता" मैं इतना धोखा खा चुकी हूँ कि अब मुझमें धोखा खाने की शक्ति नहीं है। और वो चली गयी। मैं दूसरे ट्रेन की प्रतीक्षा करता स्टेशन पर खड़ा रहा।

नहीं रहे श्रीराम तिवारी – जालान पुस्तकालय के

स्मृति

– कवि एवं शायर नन्दलाल रौशन

श्रीराम तिवारी को पता नहीं कितने दिनों से जानता हूँ? याद नहीं। जबसे साहित्य की समझ हुई शायद तबसे। अपने जीवन में इतना शालीन मनुष्य मैंने शायद ही देखा है। अपनी शक्ति और सामर्थ के अनुसार असंख्य लोगों का कल्याण करते हुए मैंने उन्हें देखा है। अभी-अभी सूचना मिली की लोकयात्रा आज रुक गयी। कहने के लिए तो हम कहेंगें की प्रभु उनकी आत्मा को शांति दें। पर श्रीरामजी ने उनके अपनों को अशांत कर दिया। उनके प्रियजन बड़े उदास हैं...बहुत दुखी हैं। उनका रहना हम सभी के लिए बहुत बड़ा आश्वासन था...सम्बल था।

लगातार पिछले कुछ दिनों से श्रीरामजी मृत्यु से पंजा लड़ा रहे थे। हमें भरोसा था कि श्रीरामजी बहुत जल्द स्वस्थ होकर लौटेंगे और फिर राम मंदिर के पुस्तकालय में उसी कुर्सी पर फिर से बैठे नजर आयेंगे जिस पर बैंठते आये हैं और जिसे जालान परिवार ने उन्हें हमेशा के लिए सौंपा था और निश्चिंत था।

विनम्र स्वभाव के धनी श्रीराम तिवारी का जाना इस शहर के लिए उदासी में डूब जाना है। एक बहुत बड़ी रिक्तता है कोलकाता के लिए...

नमन करता हूँ ऐसे भद्र मानुष को....

जालान पुस्तकालय के साथ हमेंशा के लिए श्रीरामजी का नाम जुड़ चुका है। इसका साक्षी कोलकाता है।

स्मृति सभा (एक)

राम मंदिर पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष श्रीराम तिवारी के निधन पर भारतीय भाषा परिषद कोलकाता के पुस्तकालय में शोक सभा आयोजित की गई।

परिषद के निदेशक सह वागर्थ पत्रिका के संपादक शंभुनाथजी ने श्रद्धांजलि देते हुए उनके व्यक्तित्व पर चर्चा की। विश्व भारती विश्वविद्यालय शांतिनिकेतन के हिन्दी भवन की प्रध्यापिका मंजुरानी सिंह ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि तिवारी जी के प्राण पुस्तकों में बसते थे। उनके निधन से अपूरणीय क्षति हुई है। कथाकार ब्रजकिशोर झा ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि किस प्रकार वे पाठकों की मदद करने को तत्पर रहते थे।

भारतीय भाषा परिषद पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष बालेश्वर राय ने भी अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित की। इस अवसर पर भारतीय भाषा परिषद परिवार के अलावे कोलकाता के कई साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

स्मृति सभा (दो)

अपनी भाषा संस्था द्वारा माधव भवन में।

स्मृति सभा (तीन)

जालान पुस्तकालय, राममन्दिर सेंट्रल एवेन्यू कोलकाता

पटेल को बड़ा दिखाने के लिए नेहरू को छोटा करने की साजिश

–राम पुनियानी
अंग्रेजी से हिन्दी
रूपान्तरण अमरीश
हरदेनिया

पिछले कुछ वर्षों से 31 अक्टूबर के आसपास, संघ परिवार, सरदार वल्लभभाई पटेल का महिमामंडन करने वाले बयानों की झड़ी लगा देती है। सन् 2017 का अक्टूबर भी इसका अपवाद नहीं था। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, "मैं भाजपा से हूँ और सरदार पटेल कांग्रेस में थे परन्तु मैं फिर भी उनकी विचारधारा का पालन करता हूँ और उनके दिखाए रास्ते पर चलता हूँ। उनकी विचारधारा किसी पार्टी की नहीं है। इसके साथ ही, जवाहरलाल नेहरू का कद छोटा करने के प्रयास भी रो रहे हैं। मोदी ने कहा कि नेहरू ने सरदार पटेल की अंतिम यात्रा में भाग नहीं लिया। मोदी भाजपा के यह प्रयास एक राजनीतिक एजेंडा का हिस्सा है।

भाजपा जिस विचारधारा को मानती है, उस विचारधारा से जुड़े किसी संगठन या नेता ने स्वाधीनता संग्राम में भाग नहीं लिया था। जाहिर है कि भाजपा को एक ऐसे नायक की जरूरत है जो स्वादीनता संग्राम सेनानी रहा हो। इसके लिए उन्होंने सरदार पटेल को चुना है। नेहरू एक अत्यंत ऊँचे कद के नेता थे और धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के हामी थे। भाजपा और उससे जुड़े संगठन नेहरू की भूमिका को कम करके दिखाना चाहते हैं। इसी एजेंडे के तहत बार-बार इस आशय के वक्तव्य जारी करते हैं जिनसे ऐसा लगे कि नेहरू और पटेल के बीच गंभीर मतभेद थे। इन वक्तव्यों के जरिए, पटेल का महिमामंडन किया जाता है और नेहरू का कद घटाने का प्रयास। भाजपा का स्वाधीनता संग्राम के दो वरिष्ठतम नेताओं को एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास अत्यंत घृणित है।

मोदी का यह दावा कि वे पटेल की विचारधारा के हामी हैं और इनके दिखाए रास्ते पर चल रहे हैं एक बड़ा झूठ है। पटेल एक भारतीय राष्ट्रवादी और गांधी जी के अनन्य अनुयायी थे। इसके विपरीत, मोदी, आरएसएस की विचारधारा में रंगे हुए हैं, जिसका मूल एजेंडा हिन्दू राष्ट्रवाद है। पटेल, आरएसएस की विचारधारा की बांटने वाली प्रवृत्ति से अच्छी तरह वाकिफ थे। वे जानते थे कि आरएसएस घृणा फैलाने के अलावा कुछ नहीं करता। महात्मी गांधी की हत्या के बाद पटेल ने लिखा "…इन दोनों (आरएसएस और हिन्दू महासभा) संगठनों विशेषकर पहले की गतिविधियों के चलते देश में इस तरह का वातावरण बन गया जिसके कारण इतनी भयावह त्रासदी संभव हो सकीं.. आरएसएस की गतिविधियां शासन और राज्य के अस्तित्व के लिए स्पष्ट खतरा थीं।"

भाजपा के पटेल और नेहरू को एक दूसरे का प्रतिद्वंद्वी, बल्कि शत्रु बताने का प्रयास निंदनीय है। सच यह है कि दोनों एक-दूसरे को अच्छी तरह समझते थे और एक-दूसरे के पूरक थे। उनके बीच किसी तरह की कोई प्रतिद्वंद्विता नहीं थी। पटेल जानते थे कि नेहरू की लोकप्रियता जबरदस्त है। एक रैली, जिसमें पटेल और नेहरू दोनों ने भाग लिया था, में उमड़ी विशाल भीड़ पर टिप्पणी करते हुए पटेल ने अमेरीकी पत्रकार विन्सेंट शीएन से कहा था कि "वे जवाहर के लिए आए थे मेरे लिए नहीं।" इसके साथ ही, पटेल कांग्रेस संगठन की रीढ़ थे। गांधी, जिन्हें राष्ट्र ने देश का पहला प्रधानमंत्री चुनने का अधिकार दिया था, ने इस पद के लिए नेहरू को चुना क्योंकि वे जानते थे कि नेहरू को वैश्विक राजनीति की बेहतर समझ है और वे जनता के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हैं।

नेहरू को छोटा सिद्ध करने के लिए मोदी किस हद तक जा सकते हैं यह इस बात से जाहिर है कि उन्होंने कहा कि नेहरू ने पटेल के अंतिम संस्कार में भाग नहीं लिया ता। 'द टाईम्स ऑफ इंडिया' ने पटेल के अंतिम संस्कार की खबर प्रमुखता से अपने मुखपृष्ठ पर छापी थी। इसने कहा गया था कि इस मौके पर राष्ट्रपति डॉ०राजेन्द्र प्रसाद और प्रधानमंत्री पंडित नेहरू मौजूद थे। समाचारपत्र में नेहरू की सरदार पटेल को श्रद्धांजलि भी प्रकाशित हुई थी, जिसमें उन्होंने कहा था कि सरदार पटेल ने भारत को स्वाधीनता दिलवाने और राष्ट्र के रूप में उसके निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने एक वीडियो क्लिप पोस्ट की थी जिसमें नेहरू को पटेल के अन्तिम संस्कार में भाग लेते

दिखाया गया था। मोरारजी देखाई ने अपनी आत्मकथा (खंड 1, पृष्ठ 271, अनुच्छेद 2) में इस अवसर पर पंडित नेहरू की उपस्थिति की चर्चा की है। इन तथ्यों के सामने आने के बाद मोदी अपनी बात से पलट गए और यह दावा किया गया कि उनकी बात को गलत ढंग से प्रस्तुत किया गया था परंतु इससे साफ है कि मोदी और उनके साथी, नेहरू की नकारात्मक छवि बनाने के लिए कितने आतुर हैं।

कांग्रेस नेहरू और पटेल के बीच खाई थी यह बताने के लिए प्रयासों के तहत मोदी ने गुजरात में खेड़ा में बोलते हुए कहा कि कांग्रेस ने देश के विभाजन को सुगम बनाया। तथ्य यह है कि उस समय कांग्रेस की ओर से जो दो बड़े नेता चर्चाओं में भाग ले रहे थे वे थे सरदार पटेल और जवाहरलाल नेहरू। जसवंत सिंह ने जिन्ना पर लिखी अपनी पुस्तक में विभाजन के लिए नेहरू-पटेल को दोषी बताया था। विभाजन कई जटिल कारकों का नतीजा था। अब, जहाँ पटेल की प्रशंसा की जा रही है वहीं कांग्रेस को विभाजन के लिए दोषी बताया जा रहा है। यह सरासर झूठ है क्योंकि तत्समय जो भी निर्णय लिए गए थे उसमें नेहरू और पटेल की बराबर भागीदारी थी। व्ही.पी.मेनन, जिन्होंने विभाजन की योजना तैयार की थी, ने लिखा है कि "पटेल ने भारत के विभाजन को दिसंबर 1946 में ही स्वीकार कर लिया था। नेहरू इसके लिए छह माह बाद राजी हुए।"

नेहरू और पटेल अलग-अलग रास्तों पर चल रहे थे यह प्रचार पहले भी किया जाता रहा है– यहाँ तक कि दोनों के जीवनकाल में भी नेहरू ने पटेल को लिखा कि वे इस तरह की अफवाहों से विक्षुब्ध हैं और उन्हें इससे पीड़ा होती है। इसके जवाब में पटेल ने 5 मई, 1948 को अपने पत्र में नेहरू को लिखा, "आपके पत्र ने मेरे मन को गहरे तक छू लिया.... हम दोनों जीवन भर एक साथ मिलकर एक ही उद्देश्य के लिए काम करते आए हैं। हमारे दृष्टिकोणों और स्वभाव में चाहे जो भी अंतर हो परन्तु हमारे परस्पर प्रेम और एक-दूसरे के प्रति सम्मान के भाव और हमारे देश के हित उसमें हमेशा ऊपर रहे।" उन्होंने संसद में बोलते हुए कहा, "मैं सभी राष्ट्रीय मुद्दों पर प्रधानमंत्री के साथ हूँ। लगभग चौथाई सदी तक हम दोनों ने हमारे गुरु (गांधी) के चरणों में बैठकर भारत की स्वाधीनता के लिए एक साथ संघर्ष किया। आज जब महात्मा नहीं हैं तब हम आपस में झगड़ने की बात सोच भी नहीं सकते।"

कश्मीर के मुद्दे पर भी यह दिखाने का प्रयास किया जा रहा है कि दोनों के बीच मतभेद थे और अगर पटेल की चलती तो वे बल प्रयोग कर कश्मीर को भारत का हिस्सा बना लेते। आईए, हम देखें कि सरदार बल्लभभाई पटेल का उस मुद्दे पर क्या कहना था। बंबई में एक आमसभा को संबोधित करते हुए 30 अक्टूबर, 1948 को पटेल ने कहा, "कई लोग ऐसा मानते हैं कि अगर किसी क्षेत्र में मुसलमानों का बहुमत है तो वह पाकिस्तान का हिस्सा बनना चाहिए। वे इस बात पर आश्चर्य व्यक्त करते हैं कि हम कश्मीर में क्यों हैं? इस प्रश्न का उत्तर बहुत सीधा सा है। हम कश्मीर में इसलिए हैं क्योंकि कश्मीर के लोग चाहते हैं कि हम वहाँ रहें। जिस क्षण हमें यह एहसास होगा कि कश्मीर के लोग यह नहीं चाहते कि हम उनकी जमीन पर रहें, उसके बाद हम एक मिनिट पर वहाँ नहीं रूकेंगे.... हम कश्मीर के लोगों का दिल नहीं तोड़ सकते। (द हिन्दुस्तान टाईम्स, 31 अक्टूबर 1948)"

जैसा कि पटेल के पत्रों और संसद में दिए गए इनके वक्तव्यों से जाहिर है, इन दोनों नेताओं का आपस में जबरदस्त तालमेल और घनिष्ठता थी और एक दूसरे का बहुत सम्मान करते थे। भाजपा का झूठा प्रचार कभी सफल नहीं होगा।

सदीनामा को सिर्फ आप तक पहुँचा कर ही हमें संतोष नहीं, आप कोलकाता आएं

- परीक्षा केन्द्र बनाएं
- भयंकर बीमारी की चेकिंग/इलाज
- भ्रमण : गंगासागर/सुन्दरवन
- पुस्तक का प्रकाशन
- सेमिनार का आयोजन
- कोई भी शोध कार्य बस एक महीना पहले सम्पर्क करें।

यह नि:शुल्क नहीं है

हमें लिख भेजे– **मिनाक्षी सांगानेरिया**

मनु शर्मा नहीं रहे

आठ खंडों में प्रकाशित कथाकृति 'कृष्ण की आत्मकथा' के रचनाकार मनु शर्मा ने 8 नवम्बर 2017 को इस नश्वर जगत से विदा ली। जैसे ही यह खबर फैली, अपने प्रिय रचनाकार को भावभीनी अश्रुपूरित अन्तिम विदाई देने के लिए काशी का जन सैलाब जैसे उमड़ पड़ा।

मनु शर्मा का पूरा नाम हनुमान प्रसाद शर्मा था। इनका जन्म फैजाबाद जनपद के अकबरपुर कस्बे में शरद पूर्णिमा के दिन 29 अक्टूबर, 1928 को हुआ था। प्रसिद्ध समाजवादी नेता डॉ० राममनोहर लोहिया की भी यही जन्मभूमि थी। शर्माजी के पिता का नाम पं० रघुनाथ प्रसाद शर्मा था। कुछ वर्षों बाद संभवत: आर्थिक परेशानियों के कारण ब्राह्मण परिवार काशी स्थानांतरित हुआ। विश्वेश्वर गंज में रघुनाथ प्रसाद जी ने छोटी सी गमछे की दुकान जमाई थी। बालक मनु शर्मा भी इस दुकान पर बैठा करते थे और कभी-कभी साइकिल से फेरी भी लगाकर भी थोड़ी बहुत बिक्री कर लेते थे। उस समय मनु शर्मा की अवस्था कोई चौदह-पन्द्रह बरस की रही होगी, जब दुर्भाग्यवश उनके पिता का एकाएक देहांत हो गया और मुसीबतों का पहाड़ इस परिवार पर टूट पड़ा। मनु शर्मा के तीन भाई और दो बहने थीं। सभी इनसे छोटे थे। इनकी माताजी श्रीमानों के घरों की रसोई सँभालकर किसी प्रकार अपने परिवार का पालन करती थीं।

सरकारी मिडिल स्कूल से आठवाँ दर्जा पास किया। इसके उपरांत इनकी शिक्षा का क्रम नियमित नहीं रहा। परिवार के पालन-पोषण के लिए आय का साधन आवश्यक था। संयोग से जिस घर में यह परिवार रहता था, उसके मालिक बाबू शंभुनाथ वर्माजी डी.ए.वी. कॉलेज के बड़े बाबू थे। उन्होंने शर्माजी को छोटे-मोटे ऑफिस के काम करने ले लिए लगा दिया। उन्हीं की कृपा से शर्माजी ने प्राइवेट छात्र के रूप में दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। शर्माजी ने पढ़ाई-लिखाई का क्रम जारी रखा। उन्होंने बिना व्यवधान के इंटर, बी.ए. तथा एम.ए. की परीक्षाएँ प्राइवेट छात्र के रूप में उत्तीर्ण कर ली। फिर इनकी डी.ए.वी. कॉलेज में ही अध्यापक पद पर नियुक्ति भी हो गई। उन दिनों डी.ए.वी. कॉलेज के प्राचार्य श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ थे। वे हास्य-व्यंग्य के प्रसिद्ध कवि-लेखक थे। शर्माजी को उनका वरदहस्त तथा संरक्षण भी मिला। गौड़जी ही 'बेढ़ब बनारसी' के रूप में विख्यात रचनाकार थे। आए दिन इनके यहाँ साहित्यकारों का जमावड़ा लगता था। बेढबजी का घर शर्माजी के पड़ोस के मोहल्ले में ही था। शर्माजी भी नियमित रूप से बेढ़बजी के यहाँ जाने लगे तथा कविता-कहानी भी लिखने लगे। शर्माजी प्रतिभा के धनी तो थे ही, शीघ्र ही गौड़जी के प्रधान शिष्यों में इनकी गिनती होने लगी। शर्माजी भी गौड़जी के साथ-साथ काव्य-गोष्ठियों, सम्मेलनों तथा अन्य आयोजनों में जाने लगे। शर्माजी का अपने गुरु की तरह रूप-रंग, कद-काठी तथा चाल-ढाल तो था ही, उनके लहजे तथा स्वभाव की झलक भी इनपर दिखने लगी। सदा प्रसन्न दिखना, मुसकराहट बिखेरना, अत्यन्त आत्मीय ढंग से हाल-चाल पूछना, फिर किसी-न-किसी बात पर अगले की चुटकी लेना, यह सब गुरु का प्रभाव ही तो था। वे अपने गुरु की तरह हाजिरजवाब भी थे।

एक और महानुभाव थे, जिनका परम ऋणी शर्मीजी अपने को मानते थे। वे थे हिन्दी प्रचारक संस्थान के स्वामी श्रीकृष्ण चन्द्र बेरीजी। जिन पुस्तकों के फलस्वरूप शर्माजी प्रकाश और चर्चा में आए, वे सभी आरंभ में हिन्दी प्रचारक संस्थान से ही प्रकाशित हुई थीं। बेरीजी ओजस्वी वक्ता थे और उन्हें गोष्ठियाँ, सेमिनार, मेले आयोजित करने की धुन सवार रहती थी। बेरीजी 'हिन्दी प्रचारक' नामक पत्रिका भी निकालते थे। इन सब कार्यों के प्रबंधन के लिए उन्हें शर्माजी का सहयोग मिला। शर्माजी ने भी हिन्दी प्रचारक संस्थान के तत्त्वावधझान में होनेवाली गोष्ठियों और सभाओं के मंच-संचालन, अतिथियों के आगत-स्वागत, परिचय, धन्यवाद-प्रकाश आदि कार्यों का भार भी बखूबी सँभाला। परिणामत: शर्माजी प्रखर वक्ता के रूप में निखरे। मुझे स्मरण है कि उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा लोहिया सम्मान से विभूषित होने पर अभार व्यक्त करते समय मनु शर्मा ने जो और जैसी वक्तृता दी थी, उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा हुई थी और हॉल तालियों से गूँज उठा था। उसी समारोह में 'पत्रकारिता भूषण' से नवाजे गए दैनिक 'गांडीव' के सम्पादक डॉ० भगवानदास अरोड़ा की बगल में बैठा था। डॉ० साहब ऊँचे स्वर में एकबारगी बोल उठे – 'क्या खूब बोले!'

बीसवीं शती के छठे दशक में मनु शर्मा ने ऐतिहासिक उपन्यासों द्वारा प्रकाशन जगत् में दस्तक दी। इनमें 'एकलिंग का दीवान' और 'राणा साँगा' विशेष रूप से चर्चित रहे। इन ऐतिहासिक उपन्यासों द्वारा शर्माजी ने युवा वर्ग में स्वाभिमान तथा शौर्य की भावना बखूबी जगाई। इसके बाद शर्माजी महाभारतकालीन पौराणिक

कथाओं को आधार बनाकर तत्कालीन महानायकों की आत्मकथायें लिखने की ओर प्रवृत्त हुए। इस क्रम में पहला पुष्प 'द्रोण की आत्मकथा' था। फिर क्रम में 'कर्ण की आत्मकथा', 'द्रौपदी की आत्मकथा', 'कृष्ण की आत्मकथा' तथा 'गांधारी की आत्मकथा' का प्रकाशन हुआ। इन आत्मकथाओं के आकार लेने में 35-40 वर्ष का समय लगा। शर्माजी ने एक अवसर पर कहा था कि इस बीच मैंने अठारह बार महाभारत तथा कुछ अन्य पुराणों का अध्ययन किया है। उन कृतियों की मुख्य विशेषता रही कि सभी नायक पुराकालीन होते हुए भी वर्तमान समय और परिस्थितियों की दृष्टि से उपयोगी और दिशा-निर्देशक सिद्ध हों। यही कारण है कि 'कृष्ण की आत्मकथा' में कृष्ण से बार-बार कहलवाया है कि 'मैं ईश्वर नहीं हूँ', मुझ पर ईश्वरत्व लादा जाता है।' निश्चय ही शर्माजी का कृष्ण अधिक-से-अधिक मानव, श्रेष्ठ मानव या महामानव ठहरता है। परंतु ऐसा नहीं है कि वे अपने वास्तविक जीवन में भगवतसत्ता को स्वीकार न करते हों। वे भगवतसत्ता को स्वीकार करते थे। इस नश्वर संसार से विदा लेते समय उनके मुख से अन्तिम शब्द 'राम' ही निकला। कुछ समय पहले अपने दिए हुए साक्षात्कार में उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा, "आज अट्ठासी वर्ष की वय में बार-बार सोचता हूँ तो यही पाता हूँ कि जीवन की डोर तो उसी के हाथ में है।" और साथ ही अपनी एक पुरानी कविता की निम्नलिखित दो पंक्तियाँ भी सुनाईं–

तुम हो या नहीं, इसे कोई नहीं जानता
बिना तुझे माने, दिल मानता भी नहीं।

शर्माजी का साहित्य-संसार और भी विस्तृत है। 'अभिशप्त कथा' 'मरीचिका, तीन प्रश्न, लक्ष्मण रेखा, के बोले माँ तुमि अबले, विवशिता, गाँधी लौटे उनके अन्य उपन्यास हैं। 'मुंशी नवनीत लाल' और पोस्टर उखड़ गया उनके दो कहानी संग्रह हैं। उन्होंने छोटी छोटी व्यंग्यपूर्ण कविताएँ भी लिखीं, जो काशी के दैनिक जनवार्त्ता में नियमित रूप से दो-ढाई वर्षों तक छपती रहीं।

शिल्प और भाषा की दृष्टि से मनु शर्मा की कृतियाँ पाठकों को रिझाने और अभिभूत करने में भी सफल रहीं। लगता है कि हर वाक्य का एक-एक शब्द जैसे तौल-तौलकर रखा गया हो। मनु शर्मा कहा करते थे कि मैं वाक्य में एक-एक शब्द बुनता हूँ। पदे-पदे उपमाओं और व्यंग्योक्तियों की छटा तो देखने को मिलती ही है, मुहावरों की बहार भी है, जो कथन शैली को अधिक प्रभावपूर्ण बनाती है।

पिशाचमोचन स्थित श्रीकृष्ण चंद्र बेरी के हिन्दी प्रचारक संस्थान में नित्य सायंकालीन गोष्ठी में काशी के कतिपय साहित्यकार सम्मलित होते थे। मनु शर्मा, डॉ० रघुनाथ सिंह, डॉ० लक्ष्मी नारायण मिश्र, डॉ० गिरीशचन्द्र शर्मा, डॉ०युगेश्वर और इन पंक्तियों का लेखक तो प्राय: उस गोष्ठी में नित्य सम्मिलित होते थे। सप्ताह में एक-आध बार यदा-कदा आने वालों में डॉ० विश्वनाथ प्रसाद, डॉ० सर्वजीत राय, डॉ० इंदीवर, श्री जगदीश जगेश, डॉ० उदय प्रताप सिंह, डॉ० अशोक सिंह आदि थे। इन गोष्ठी में किसी-न-किसी साहित्यिक सामाजिक, राजनैतिक विषय या समस्या पर चर्चा होती ती विद्वानों के भिन्न-भिन्न विचार सुनने को मिलते थे। गोष्ठी की चर्चा का उपसंहार मनु शर्मा ही करते थे। इन्हीं गोष्ठियों में उनके अगाध ज्ञान और अद्भुत स्मरण-शक्ति के भी दर्शन हुआ करते थे। सूर, तुलसी, कबीर, घनानंद, बिहारी, रहीम, रसखान, पद्माकर, रत्नाकर, निराला, दिनकर आदि महाकवियों की रचनाएँ सुनाते थे तो समय बँध जाता था।

मनु शर्मा सायंकाल गोष्ठी में सम्मिलित होने के लिए घर से निकलते थे तो प्राय: हमारी कुटिया 'शब्द लोक' में भी पधारते थे। डॉ० युगेश्वर तो ऐसे प्रेमी थे, जो कृपापूर्वक नित्य 'शब्दलोक' में पधारते थे। फिर हम दोनों हिन्दी प्रचारक संस्थान साथ-साथ जाते थे। जब शर्माजी आते थे तो वे अपनी गाड़ी से आते थे और हम दोनों को गाड़ी में बैठाकर हिन्दी प्रचारक संस्थान ले जाते थे। एक दिन मैं और शर्माजी डॉ० युगेश्वर की प्रतीक्षा कर रहे थे। थोड़ी देर में डॉ० युगेश्वर आए। वे अपने साथ कोई पुस्तक लाए थे, जिसे उन्होंने मुझे पकड़ाया। मैंने पुस्तक मेज पर रखी और उनके साथ चलने को तैयार हो गया। डॉ०युगेश्वर ने मुझसे कहा, "पुस्तक ऐसे मत रखिए, सँभाल कर रखिए।" उत्तर में मैंने कहा, "यहाँ कोई आता-जाता नहीं।" इस पर युगेश्वरजी ने कहा, "कभी-कभी गायब हो जाती है। युगेश्वरजी का इतना कहना था कि शर्माजी बोल उठे, कभी-कभी तो मैं भी आता हूँ।"

एक दिन हिन्दी प्रचारक संस्थान में बेरीजी के कार्यालय में बैठे हुए थे। बेरीजी का एक कर्मचारी कोई छोटी-मोटी शिकायत लेकर आया। बेरीजी ने उसकी समस्या का निदान तो नहीं किया, उलटे उस पर अकारण बरस पड़े और कुछ बुरा-भला भी कहा। जब वह कर्मचारी वहाँ से चला गया तो मनु शर्मा बेरीजी के स्वभाव पर टिप्पणी करने से न चूके। उन्होंने बेरीजी को संबोधित करते हुए कहा, "जब मच्छर मारना होता है तो आप बंदूक चलाते हैं और जब बंदूक चलाने का अवसर होता है आप फुलझड़ी छोड़ते हैं।"

मनु शर्मा यशस्वी तथा सम्मानित साहित्यकार तो थे ही, आदर्श मानव भी थे। वे विनम्र तथा शांत स्वभाव के थे। वे कभी किसी की निन्दा नहीं करते थे। कुशवाहाकांत, गोविन्द सिंह आदि जिन लेखकों

को तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखा जाता था, मनु शर्मा उनमें भी अच्छाई ढूँढ़ निकालने से नहीं चूके। मनु शर्मा कहते थे कि कुशवाहाकांत ने कुछ अवसरों पर ऐसी चीजें दी हैं, जो मील के पत्थर हैं। अपने मित्रों का मानवर्धन तो करते ही थे, नए लेखकों की सामान्य समझी जानेवाली रचना में भी कोई-न-कोई विशेषता ढूँढ़ लेते थे। ऐसे लेखकों का उत्साहवर्धन करते थे और उन्हें परामर्श भी देते थे। प्राय: देखने-सुनने में आता था कि कोई रचनाकार उनके पास सहायता-सहयोग के लिए आता था तो उसे भी निराश होकर या खाली हाथ नहीं जाना पड़ता था। संतोषी ऐसे थे कि कभी किसी प्रकाशक या संपादक को रॉयल्टी या पारिश्रमिक के लिए नहीं लिखा। किसी ने भेज दिया तो ठीक, नहीं भेजा तो न सही। संबंधों और दायित्वों को निभाने में भी वे सदा तत्पर दिखे। वैयक्तिक दृष्टि से पिछले पचास वर्षों से उन्हें अग्रज के रूप में मानता रहा हूँ और उन्होंने अग्रज की नाई अनेक अवसरों पर सत्परामर्श द्वारा मुझे धन्य किया है।

काशी के गौरव तथा हिन्दी के यशस्वी कथाकार मनु शर्मा को मेरी सादर श्रद्धांजलि।

साभार : "साहित्य अमृत" से लेखक का नाम नहीं खोज पाए पर पता– शब्दलोक, 47 लाजपतनगर, वाराणसी (उ०प्र०)

सत्संग भवन ५० वां स्वर्ण जयन्ती महोत्सव -२०१७

17 दिसम्बर 2017 को त्रिदिवसीय महोत्सव का उद्घाटन महामहिम राज्यपाल केशरीनाथ जी त्रिपाठी एवं निर्वाण पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी विशोकानन्द महाराज ने किया। सत्संग भवन पर केन्द्रित ग्रन्थ 'अध्यात्म ज्योति दीप्त स्वर्ण ज्योति' का विमोचन किया। इस अवसर पर पं०लक्ष्मीकान्त तिवारी, आचार्य श्रीकान्त शास्त्री, संतोष रूंगटा, दीपक मिश्रा, श्यामसुन्दर धानुका, प्रह्लादराय अग्रवाल, रामेश्वर लाल भट्टड़, सत्यनारायण असोपा, मुकेश शर्मा इत्यादि ने अतिथियों का स्वागत किया। स्वामी पुण्यानन्द जी स्वामी शुकदेवानंद जी, स्वामी चिदंबरानन्दजी, स्वामी आत्मानंद जी स्वामी शान्तिस्वरूपानन्दजी एवं भारत के विभिन्न प्रान्तों से पधारें महामण्डलेश्वर संत एवं महात्माओं को सम्मानित किया गया। निर्वाण पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी विशोकानन्दजी महाराज ने कहा कि सनातन धर्म अध्यात्म, संस्कृति का त्रिवेणी संगम है सत्संग भवन। उन्होंने अध्यात्म ज्योति, दीप्ति स्वर्ण-ज्योति पुस्तक के प्रधान संपादक आचार्य श्रीकान्त शास्त्री, सम्पादक द्वय डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी एवं पुरुषोत्तम तिवारी की सराहना की। संचालन महावीर प्रसाद रावत ने किया। जे०पी० सिंह, विनय दूबे, कृष्ण कुमार सिंघानिया, शान्तिलाल जैन, महावीर प्रसाद बजाज, संजय उपाध्याय, बुलाकीदास मिमीणी, शंकर बक्श सिंह का योगदान रहा। तीसरे दिन भण्डारे में 100 साधु और जन सामान्य लेकर 2000 व्यक्तियों ने भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया।

कोलकाता आपणो गाँव लोक संस्कृति राजस्थानी मेला-1917

यह मेला प्रवासी राजस्थानियों के अलावा अन्य लोगों का भी आकर्षण का केन्द्र है। साल्टलेक लोक संस्कृति मेला 15 वां राजस्थानी मेला आपणो गाँव निक्को पार्क के विंग लान में होता है। जहाँ ऊँट, घोड़ो, बैलगाड़ी, राजस्थानी लोक संगीत व राजस्थानी वेशभूषा में लोग खाट पर बैठ कर मानो राजस्थान पहुँच गये। इसमें इन्होंने 'बन्धन' नामक एक स्टेज बनाया जहाँ पर 12 राजस्थानी लोगों के जीवन चरित्र को चित्र और लिख कर दर्शाया गया। वहाँ पर राजस्थानी जीमण वाट चौखी-धानी भी बनी हुई थी। क्योंकि यह राजस्थानी लोगों में बहुत प्रसिद्ध है। आपणो गाँव का उद्घाटन सन्मार्ग के सम्पादक विवेक गुप्ता ने किया। बन्धन परिकल्ना के पीछे सुशील ओझा का योगदान है। उद्घाटन के समय उपस्थित लोगों में विधायक श्री सुजीत बोस, श्रीसीताराम शर्मा, हरिप्रसाद कानोडिया, विश्वनाथ अग्रवाल, वृजमोहन बेरीवाल, महेन्द्र जालान, अशोक तोदी, आई.पी.एस राजेश कुमार रवि पोद्दार, राजेन्द्र खण्डेलवाल, महेन्द्र कुमार अग्रवाल, शारदा फतेहपुरिया, किशोर कुमार शर्मा मदन गोपाल राठी, सुशील मुधड़ा उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह की सफलता का श्रेय संस्थापक मदनगोपाल राठी अध्यक्ष संदीप गर्ग, सचिव कमलेश केजरीवाल, संयोजक प्रेम झंवर, संदीप डिडवानिया व किशोर शर्मा सक्रिय थे। संचालन विश्वनाथ चांडक ने किया। स्वागत भाषण संदीप गर्ग ने दिया। धन्यवाद ज्ञापन ब्रिजमोहन बेरीवालजी ने किया। ब्रिज मोहन बेरीवालजी का कहना है यह आपणो गाँव लाने का उद्देश्य केवल राजस्थानी लोक कला संस्कृत को लोगों तक पहुँचाना जिससे हमारी जड़े जो बरगद के वृक्ष की तरह अटल रहे।

वामपंथियों को धर्मनिरपेक्ष-प्रजातांत्रिक गठबंधन का हिस्सा बनना चाहिए

राम पुनियानी
अंग्रेजी से हिन्दी
रूपांतरण
अमरीश हरदेनिया

पिछले कुछ वर्षों में भाजपा की ताकत में जबरदस्त इजाफा हुआ है, विशेषकर 2014 के आम चुनाव में इसकी शानदार जीत के बाद से। वह कई राज्यों में सत्ता में है और उसे ऐसे क्षेत्रों में भी चुनावों में विजय मिल रही है, जहाँ पहले उसका कोई अस्तित्व ही नहीं था। भाजपा की इस विजय यात्रा से अन्य राजनीतिक दल अचंभित हैं। इस संदर्भ में कामरेड प्रकाश कारत का साक्षात्कार (द हिन्दू, नवम्बर 29, 2017) महत्वपूर्ण है।

अपने साक्षात्कार में कामरेड कारत कई ऐसे प्रश्न उठाते हैं जिन पर गहराई से विचार किया जाना आवश्यक है। वे कहते हैं कि भाजपा शनै: शनै: देश की सबसे बड़ी और प्रभावी पार्टी बनकर उभर रही है और उसने कांग्रेस का स्थान ले लिया है। इस तथ्य को भविष्य की किसी भी योजना को बनाते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए। वे यह भी कहते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में भाजपा की नीतियों के कारण उसके पारंपरिक वोट बैंक, जिसमें मध्यम वर्ग और छोटे व्यवसायी शामिल हैं, का पार्टी से मोहभंग हो चुका है। श्रमिक और किसान परेशानहाल हैं और उनके आन्दोलन मीडिया की सुर्खियां बन रहे हैं। दलित भी संर्घष की राह पर चल पड़े हैं और विश्वविद्यालयों के कैम्पसों में असंतोष की सुगबुगाहट है। ऐसी स्थिति में कामरेड कारत के अनुसार, भाजपा का विकल्प प्रस्तुत करना आवश्यक है। वे कहते हैं कि आज सभी को मिलकर संघर्ष करने की जरूरत है और विभिन्न सामाजिक समूहों को एक मंच पर आना चाहिए। यह बिल्कुल ठीक है। परन्तु कामरेड कारत का यह निष्कर्ष एकदम गलत प्रतीत होता है कि मार्क्सवादी कम्युनिष्ट पार्टी किसी ऐसे गठबंधन का हिस्सा नहीं बन सकती जिसमें कांग्रेस भी हो। उनका यह भी कहना है कि भाजपा सरकार फासीवादी नहीं है बल्कि एकाधिकार-वादी और सांप्रदायिक है और अपने विरोधियों को पर इस तरह से हमले करा रही है, जो फासीवादियों से मिलते जुलते हैं।

कारत शायद वर्तमान स्थिति की भयावहता और भविष्य में उसके कारण खड़े होने वाले खतरों को पूरी तरह समझ नहीं सके हैं। सच यह है कि देश धीरे-धीरे आरएसएस के हिन्दू राष्ट्र के एजेंडे को लागू करने की ओर बढ़ रहा है। पिछले तीन वर्षों के घटनाक्रम को केवल चुनावी दृष्टिकोण से नहीं देखा जाना चाहिए। उससे हमारी संस्थाएं हमारे विश्वविद्यालय, हमारी शिक्षा प्रणाली और आर्थिक नीतियाँ गहरे तक प्रभावित हुई है, हिन्दू राष्ट्रवादी विचारधारा का वर्चस्व बहुत तेजी से बढ़ा है। राममंदिर, गोमाता और लिव जिहाद जैसे पहचान से जुड़े मुद्दों का समाज में बोलबाला हो गया है। गोरक्षा के नाम पर देशभर में कई मुसलमानों की हत्याएं हुई हैं। ऊना में दलितों की सार्वजनिक रूप से बर्बर पिटाई को सारे देश ने देखा है और मवेशियों के व्यापार से जुड़े लोगों ने अपनी जाने गंवाई हैं। कश्मीर में अतिराष्ट्रवादी नीतियों के कारण भारी संख्या में लोगों की जानें गई हैं और घायल हुए हैं। सरकारी पुरस्कारों को लौटाकर बुद्धिजीवियों, कलाकारों और लेखकों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि देश में बढ़ती असहिष्णुता उन्हें स्वीकार्य नहीं है। धार्मिक अल्पसंख्यकों को इस हद तक निशाना बनाया जा रहा है कि मुस्लिम समुदाय के कई प्रमुख चिन्तकों ने यह कहना प्रारम्भ कर दिया है कि मुसलमानों को चुनाव के चक्र में पड़ना ही नहीं चाहिए क्योंकि अगर वे ऐसा करते हैं तो इससे समाज और ध्रुवीकृत होता है।

हमारा मीडिया या तो कार्पोरेट मुगलों के नियंत्रण में है या वह सत्ताधारियों के समक्ष इतना झुक गया है कि वह श्रमिकों, किसानों और दलितों के संघर्षों को तवज्जों ही नहीं दे रहा है। क्या यह केवल एकाधिकारवाद है, जासा कि कामरेड कारत कहते हैं। एकाधिकारवाद ऊपर से थोपा जाता है। भारत में आज आम लोगों को गोलबंद कर उन्हें प्रजातंत्र का खात्मा करने के उपकरण के

रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। हिन्दू राष्ट्रवादी गुंडे सड़कों पर तांडव कर रहे हैं। हिन्दू राष्ट्रवादी विचारधारा ने देश को जकड़ लिया है। इस एजेंडा को लागू करने में आम लोगों की भागीदारी से यह स्पष्ट है कि वर्तमान सरकार को केवल एकाधिकारवादी नहीं कहा जा सकता।

भाजपा सरकार आज क्या कर रही है? एक कार्पोरेट दुनिया को पूरा सहयोग और समर्थन दे रही है, वह देश की प्रतिष्ठित संस्थाओं की स्वायतता को समाप्त कर रही है, कश्मीर में अतिराष्ट्रवादी नीतियां लागू की जा रही है, विश्वविद्यालयों को हिन्दू राष्ट्रवाद का अड्डा बनाने की कोशिशें हो रही हैं, वंदेमातरम गाना होगा और भारत माता की जय कहना होगा जैसी बातें कहकर अल्पसंख्यकों को आतंकित किया जा रहा है। इस सबके लिए निचले स्तर पर आरएसएस के विभिन्न संगठन सक्रिय हैं और शीर्ष स्तर से उन्हें केन्द्र की भाजपा सरकार का समर्थन मिल रहा है।

लोगों में असंतोष और आक्रोश तो है परन्तु समाज का एक हिस्सा नरेन्द्र मोदी के व्यक्तित्व की चकाचौंध में इतना खो गया है कि उसे यथार्थ दिखलाई ही नहीं पड़ रहा है। यह सही है कि मोदी का प्रभामंडल धीरे-धीरे क्षीण हो रहा है परन्तु अब भी वह बहुत चमकदार है। इन सब कारणों से हिन्दू राष्ट्रवादी विचारधारा के विरुद्ध संघर्ष केवल चुनावी मैदान तक सीमित नहीं रह सकता। हमें सांस्कृतिक, आर्थिक और अन्य कई मोर्चों पर भी इस विचारधारा से मुकाबला करना होगा।

कहने की आवश्यकता नहीं कि चुनावी मोर्चों पर विजय का बहुत महत्व है। संघ लगभग पिछली एक सदी से देश में काम कर रहा है परंतु उसके प्रभाव में 1980 के बाद से तेजी से वृद्धि हुई है। वह पहले भी समाज का साम्प्रदायिकीकरण करने की कोशिश करता रहा है परन्तु अब उसे इस कार्य में सफलता मिल रही है। और प्रशासन उसकी राह प्रशस्त कर रहे हैं। अगर हमें हमारे देश के धर्मनिरपेक्ष बहुवादी चरित्र को जीवित रखना है तो हमें संघ और भाजपा जैसी राजनीतिक शक्तियों को दरकिनार करना ही होगा।

इसमें कोई संदेह नहीं कि कांग्रेस की ऐसी कई नीतियाँ है जिनसे सहमत होना कठिन है। परन्तु यूपीए-1 का न्यूनतम साझा कार्यक्रम एक व्यापक गठबंधन का आधार बन सकता है। जाहिर है कि इस गठबंधन के निर्माण की राह में कई बाधाएं हैं। बिहार महागठबंधन प्रयोग कुछ अर्थों में सफल रहा है तो कुछ अर्थों में असफल भी। कुछ पार्टियों को एक मंच पर इसलिए नहीं लाया जा सकता क्योंकि उनके सामाजिक आधार एक-दूसरे को काटते हैं परन्तु फिर भी ऐसे कई राजनीतिक दल हैं जिनके साथ हाथ मिलाकर वामपंथी पार्टियाँ हिन्दू राष्ट्रवाद के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला कर सकती हैं। श्रमिकों, दलितों और किसानों के हितों से समझौता किए बगैर, आर्थिक नीतियों पर अंतरिम सहमति बनाई जा सकती है।

गैर-सांप्रदायिक राजनीतिक दलों के लिए भारतीय राजनीति में उपलब्ध स्थान सिकुड़ता जा रहा है। परन्तु जो भी स्थान उन्हें उपलब्ध हैं, उसका इस्तेमाल कर वे हिन्दू राष्ट्रवाद का मुकाबला कर सकते हैं। हिन्दू राष्ट्रवादी नीतियाँ केवल अधिनायकवादी नहीं है। वे फासीवाद से मिलती-जुलती हैं। उनका मुकाबला करने के लिए एक संयुक्त गठबंधन बनाया जाना आवश्यक है और कांग्रेस को उसका सदस्य होना ही चाहिए।

अब आर्थिक सहयोग देना हुआ और आसान
सहयोगकर्ताओं की सूची प्रतिमाह प्रकाशित होती है
SADINAMA
Current Account No. 03771100200213
PUNJAB AND SIND BANK
IFSE CODE : PSIB0000377
Bhawanipore Branch, Kolkata (West Bengal)
Phone No. For SMS To Inform - 09231845289
PLZ SMS WITH YOUR FULL POSTAL ADDRESS

राष्ट्रवाद, साम्राज्यवाद और वर्तमान परिदृश्य

राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद दोनों विचारधारा और अभियान विश्व के सामने बड़े विवादित और पेचीदा रहे हैं, एक ओर वे राष्ट्र की अस्मिता से जुड़े हैं, तो दूसरी ओर राष्ट्र के विकास की नीतियों से जुड़े हैं। जहाँ राष्ट्रवाद राष्ट्र की अस्मिता और स्वतंत्रता का समर्थक है, वहीं साम्राज्यवाद ठीक इसके विपरीत और विरोधी रूप में उपस्थित होता है। राष्ट्रवाद बहुत हद तक मानवीय रक्षा,विकास और अस्तित्व की विचारधारा पर आधारित है, तो साम्राज्यवाद अपने राष्ट्र के विकास के लिए हिंसा का सहारा लेते हुए अमानवीय, अहम से युक्त, लाभ केन्द्रित नीति को धारण किए है। राष्ट्रवाद राष्ट्र+वाद से बना है, अंग्रेजी में वाद को ism कहा जाता है। इसी प्रकार साम्राज्यवाद शब्द बना है। राष्ट्रवाद भावनात्मक रूप से राष्ट्र में रह रहे उस सामुदायिक आस्था का एक रूप है, जिसमें सभी निवासी राष्ट्र की ऐतिहासिक परम्परा को महत्व देते हुए उसके समस्त तत्वों को समान रूप से एक मानते हैं और उसे आदर्श रूप में देखने के पक्षपाती हैं, जिसमें संस्कृति, भाषा, इतिहास, धर्म और राष्ट्र की सीमाओं को देखा जा सकता है। राष्ट्रवाद जाति, समुदाय, धर्म और सम्प्रदाय की परिसीमा से मुक्त एक भावनात्मक और विचारात्मक दृष्टि है, जो देश के प्रत्येक नागरिक में मौजूद रहती है। ये राष्ट्रवाद लोगों के अभिमान और अस्तित्व से सीधा जुड़ा हुआ है, जिसमें उसकी सीमाओं में रहने वालों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी विभिन्न अस्मिताओं के ऊपर राष्ट्र के प्रति निष्ठा को महत्व दें। यह स्वत: निश्चित होता है कि वे राष्ट्र के कानून में विश्वास करेंगे, उसका पालन हरसंभव परिस्थितियों में करेंगे। राष्ट्रवाद और देशभक्ति में खासा अंतर है, दोनों एक नहीं बल्कि अलग-अलग स्थितियाँ हैं। राष्ट्रवाद विचाराश्रित, नीतिगत, आवश्यकता से जन्मा एक कार्यक्रम है और देशभक्ति भावना का क्षेत्र है। जरूरी नहीं कि देशभक्ति देश में रहकर ही की जाए, वह विदेश में रहकर भी की जा सकती है। यहाँ तक कि अगर आपके पास दोहरी नागरिकता है, तो दो राष्ट्रों की भी देशभक्ति की जा सकती है। राष्ट्रवाद का उदय अट्ठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के यूरोप में हुआ था, यह विचार और भावना इतनी तेजी से विकसित और शक्तिशाली सिद्ध हुई थी कि समस्त विश्व इससे प्रभावित हुआ और इसे विश्व के कई राष्ट्रों द्वारा अपनाया गया। इसी विचार और भावना को आधार बनाकर विश्व के कई राष्ट्रों ने साम्राज्यवाद से लोहा लिया और अपने को आजाद कराया।

साम्राज्यवाद वह दृष्टिकोण है, जिसके अनुसार कोई महत्वाकांक्षी राष्ट्र अपनी शक्ति, गौरव, भूमि और सम्पदा को बढ़ाने के लिए अन्य देशों के प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लेता है, यह अधिकार कई तरह से होता है, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और यहाँ तक कि धार्मिक-साम्प्रदायिक भी। इसके तहत किसी राष्ट्र पर पूर्णत: कब्जा किया जाता है और अपनी कानूनी व्यवस्था में रहने पर लोगों को बाध्य किया जाता है, जिससे संस्कृतिक प्रभाव पड़ने के साथ जातीय, भाषाई और आर्थिक परिवर्तन उस उपनिवेश में उत्पन्न हो जाते हैं और वह राष्ट्र साम्राज्यवाद का अंग बनकर अपनी हैसियत खोने के साथ कई प्रकार के शोषण, क्षरण और गर्त में चला जाता है। साम्राज्यवाद एक कार्यक्रम है, एक अभियान है, इसमें महत्वाकांक्षा, आर्थिक उद्देश्य, सभ्यता प्रसार के तत्वों का समावेश होता है, राष्ट्रवाद भी इससे सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है। वास्तव में ये दोनों शब्द सामान्य या मामूली शब्द नहीं, बल्कि हमारे इतिहास और वर्तमान जीवन से जुड़ी घटनाओं से इसका सीधा संबंध है। भारत में प्राचीनकाल में अखण्ड भारत की परिकल्पना उपस्थित थी, गुप्तकाल हो या मौर्यकाल या कोई अन्य काल क्यों न हो। उस समय के शासकों ने अखंड भारत के निर्माण की परिकल्पना की थी और प्रयास भी किए थे। फिर कई मुस्लिम शासकों ने साम्राज्य की स्थापना के लिए अविराम युद्ध लड़े, यह सब साम्राज्यवाद के रूप में देखा जा सकता है। पश्चात में ब्रिटिशों की साम्राज्यवादी नीति के तहत भारत उनका औपनिवेशिक बन गया, तब राष्ट्रवाद की स्थिति और अधिक साफ हो गई। स्वतंत्रता पूर्व जनमानस में यह पूर्णत: स्पष्ट हो गया कि राष्ट्र क्या होता है और राष्ट्रवाद क्या है। साम्राज्यवाद किसी भी तरह का क्यों न हो वह खतरनाक ही होता है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात विश्व के प्रमुख राष्ट्रों ने संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की और राष्ट्रों की साम्राज्यवादी नीतियों पर लगाम कसने के लिए स्वयं को और दूसरों को प्रतिबद्ध किया गया कि अब विश्व में किसी तरह का

साम्राज्यवाद न होगा। लेकिन क्या साम्राज्यवाद रुक गया? क्या साम्राज्यवाद समाप्त हो गया? इस प्रश्न के उत्तर में साफ तौर पर कहा जा सकता है कि साम्राज्यवाद का रूप बदल गया है, लेकिन साम्राज्यवाद अभी रुका नहीं है। एक राष्ट्र अपनी पूँजी को बढ़ाने और उत्पाद को खपाने के लिए हर संभव उपाय करता हुआ किसी भी तरह से अपनी व्यापारिक नीतिया बनाकर अपने माल को विश्व में खपा रहा है। आज पूँजी किसी भी राष्ट्र के उत्थान और पतन का मूलाधार बन गई है, इस पूँजी के संग्रहण से वह शक्ति उत्पन्न करता है और विभिन्न संसाधनों की आपूर्ति अपने राष्ट्र के लिए करता है। आज अर्थ ने केन्द्र में अपनी जगह बनाई है और इसी कारण नए प्रकार की साम्राज्यवादी नीतियों को बनाया गया तथा उन्हें लागू किया जा रहा है। एक प्रश्न और उपस्थित होता है – क्या साम्राज्यवाद किसी राष्ट्र की नीति का हिस्सा न रहा? प्रत्यक्ष तौर पर तो साम्राज्यवाद विश्व में कम देखने को प्राप्त होगा, खाड़ी के राष्ट्र अब भी प्रत्यक्ष साम्राज्यवाद को अपनी साम्राज्यवादी नीति का भाग मानकर चल रहे हैं। इस साम्राज्यवाद की नीति में कहीं जाति, धर्म और संप्रदाय की प्रभुता, कट्टरता प्रमुख रूप स्पष्ट रूप से नजर आती है। वर्तमान में तेल के आधार पर साम्राज्यवाद को विकसित किया जा रहा है, विश्व में कच्चे तेल अधिग्रहण को लेकर आपसी प्रतिस्पर्धा और संघर्ष राष्ट्रों का उपस्थित हुआ है। इराक, ईरान, अरब, इजराइल आदि राष्ट्रों के पास तेल का भंडार है, आज जिसके पास तेल का अधिग्रहण है, वह एक बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में पहचाना जाएगा। इस अधिग्रहण में महाशक्तियों के दबाव, विदेश नीति और प्रभुत्व को लेकर आपसी राजनीतिक, आर्थिक संघर्ष मौजूद है। अमेरिका तेल प्राप्ति के लिए हर संभव अपनी समस्त शक्ति का दुरुपयोग करते हुए लोकतांत्रिक वैश्विक व्यवस्था को तहस-नहस कर रहा है। इधर चीन भारत पर पहले ही साम्राज्यवादी नीति के तहत आक्रमण करके भारत की भूमि का अधिग्रहण कर चुका है और वर्तमान में भी वह भारत की सीमाओं में बार-बार प्रवेश कर अपनी सीमाओं के विस्तार को महत्व दे रहा है। क्या इस प्रकार की कार्यवाही साम्राज्यवाद को प्रमुखता नहीं दे रही है। आज विश्व में कई राष्ट्रों के समक्ष उनके पड़ोसी राष्ट्र साम्राज्यवादी नीति के तहत एक चुनौती बनकर खड़े हैं। भारत-पाकिस्तान हो या उत्तर कोरिया-दक्षिण कोरिया उनके पड़ोसी का भय उन्हें सताए जा रहा है। जल अधिग्रहण की समस्या भी राष्ट्रों के मध्य निरंतर एक मुद्दे के रूप में उपस्थित है, एक राष्ट्र अपने जल स्रोतों को दूसरे राष्ट्र तक न पहुँचने की साजिशें भी साम्राज्यवाद और राष्ट्रवाद के संकुचित रूप के तहत देखी जानी चाहिए। क्या साम्राज्यवाद ने अपना रूप बदल दिया? हाँ वर्तमान में कहा जा सकता है कि साम्राज्यवाद ने अपने रूप में परिवर्तन कर दिया है, कहीं तो भूमि अधिग्रहण की समस्या प्रकरण और घटनाएं समक्ष आ रही है, कहीं अर्थ को केन्द्रित कर साम्राज्यवाद को विकसित किया जा रहा है, परन्तु विश्व से साम्राज्यवाद का बोलबाला अभी समाप्त नहीं हुआ है, जबकि नए विश्व की कल्पना की जा रही है। इस नए विश्व की कल्पना में वही राष्ट्र शामिल हैं, जो, साम्राज्यवाद को बढ़ावा देते हैं, ऐसी दोहरी मानसिकता के होते हुए नए विश्व का निर्माण कैसे हो सकता है, ये सब एक आडंबर के अतिरिक्त कुछ और नजर नहीं आता है।

मोहसिन खान
स्नातकोत्तर हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक
जे.एस.एम. महाविद्यालय,
अलीबाग-402201,जिला : रायगढ़, महाराष्ट्र,
e-mail : khanhindi01@gmail.com

क्या राष्ट्रवाद की अधिकता साम्राज्यवाद में परिणित हो जाती है? जी हाँ, राष्ट्रवाद की अधिकता का परिणाम भी साम्राज्यवाद में देखा जा सकता है। जब कोई राष्ट्र अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक परमपरा में ग्रस्त होकर मोहान्ध हो जाता है, तब ऐसी स्थिति को देखा जा सकता है। एक राष्ट्र अपने को सर्वोपरि समझने लगे और अन्य को कमजोर, अनैतिहासिक, दोयम दर्जे का तो वह राष्ट्रवाद से साम्राज्यवाद की ओर बढ़ने लगता है। मार्क्स के पश्चात होरेस बी०डेविस ने राष्ट्रवाद को एक अलग नजरिये से देखा और राष्ट्रवाद को एक औजार से ज्यादा अहमियत नहीं दी और कहा कि– "हथौड़े से हत्या की जा सकती है और निर्माण भी राष्ट्रवाद के जरिये जब उत्पीड़ित समुदाय अपनी आज़ादी के लिए संघर्ष करते हैं, तो वह एक सकारात्मक नैतिक शक्ति बन जाता है और जब

राष्ट्र के नाम पर आक्रमण की कार्रवाई की जाती है, तो उसका नैतिक बचाव नहीं किया जा सकता है।" जब किसी राष्ट्र को राष्ट्रवाद के नाम पर मोहान्ध हो जाए और उसे अभिमान हो जाए कि उसकी जाति और मान्यताएँ, संस्कृति ही श्रेष्ठ है, तो अवश्य वह विकृत होते हुए साम्राज्यवाद की ओर अग्रसर हो जाता है। फांसीवादी शक्तियों का जब प्रचण्ड रूप अपनी शक्ति को प्रमुख मानते हुए दूसरे को अपने अधीन करने के लिए शक्ति का सहारा ले तो वह साम्राज्यवाद की श्रेणी में चला जाता है द्वितीय विश्वयुद्ध के समय हिटलर को साम्राज्यवादी नीति के तहत ही देखा जा सकता है, उसके राष्ट्रवाद एक बड़ा हिस्सा उच्च जाति के अभिमान से ग्रसित था इसी कारण यह अमानवीय होता हुआ यहूदियों का बड़ी मात्रा में संहार करता है। वर्तमान में सीरिया को भी इन्हीं संदर्भों में देखा जा सकता है, जहाँ राष्ट्रवाद के नाम पर अमानवीय अत्याचार निरंतर हो रहे हैं। बच्चे, बूढ़े, रोगी, स्त्रियाँ तक को वहाँ मौत के घाट खुलेआम उतारा जा रहा है। अत: राष्ट्रवाद की अधिकता और कट्टरता भी घातक सिद्ध हो जाती है। साधारण रूप में देखें तो कहा जा सकता है कि राष्ट्र के हित, विकास, उन्नति के लिए जिस तरह का मानवीय प्रयास राष्ट्र को केन्द्र में रखकर किया जाता है वही राष्ट्रवाद की सीमा में आता है। लेकिन यह प्रयास नीतिगत और आचारमयी होना जरूरी है, यदि उसमें कोई आदर्श नीति न हुई तो राष्ट्रवाद उन्मान्द, फाँसीवादी शक्तियों का आश्रय लेकर पथभ्रष्ट होकर साम्राज्यवाद का रूप धारण कर लेगा।

राष्ट्रवाद के संबंध में यह सत्य है कि प्रत्येक राष्ट्र के लिए राष्ट्रवाद जैसी धारणा होनी चाहिए, लेकिन राष्ट्रवाद के तहत स्वतंत्र प्रतिभाओं का विकास अवरूद्ध हो सकता है जो मानवीय समाज को बेहतर बनाने की कामना रखते हुए अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रयास कर रहे हैं। विश्व के मानव को राष्ट्रों की सीमाओं में बंधा न मानकर उसे समता के रूप में देखने के पक्षपाती हैं। यदि राष्ट्रवाद केवल अपनी संस्कृति, भाषा, इतिहास, जाति को श्रेष्ठ मानकर चलता है तो यहाँ आकर ये धारणा विरोधी और अप्रगतिशील सिद्ध हो जाती है। राष्ट्रवाद में दबाव का होना पाया जाता है, राष्ट्रवाद के अंतर्गत उन प्रतिभाओं को नकार दिया जाता है जो कमजोर तबके से हैं इसलिए प्रतिभाओं की समाप्ति की आशंकाएँ बढ़ जाती हैं। कभी-कभी राष्ट्रवाद जातिगत आधारों को चुनकर लिंग भेद और जाति भेद को बढ़ावा दे देता है, जबकि उसे सामुदायिक विकास की सोच रखनी चाहिए। अंग्रेजों के खिलाफ चले राष्ट्रवादी आन्दोलन के दौरान रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसी हस्तियाँ इस विचार को संदेह की निगाह से देखती थीं। पर दिलचस्पी का विषय तो यह है कि राष्ट्रवाद के ज्यादातर आलोचक राष्ट्र की सीमा में रहने के लिए विवश नहीं हैं, पर उनमें से कई हस्तियाँ किसी न किसी राष्ट्रकी स्थापना में योगदान करते हुए नजर आती हैं। राष्ट्रवाद विभिन्न विचारधाराओं को भी अपने आगोश में समेट लेता है। राष्ट्रवाद और विचारधाराओं का गहरा संबंध है, राष्ट्रवाद की धारणा का जबसे उदय हुआ है तबसे अलग-अलग विचारधाराओं ने राष्ट्रवाद को अपनी दृष्टि से ग्रहण किया तथा व्याख्या की। औपनिवेशिक विचारधारा रखने वाले विचारक खासकर कैम्ब्रिज स्कूल के विचारक इस मत का प्रतिदान करते हैं कि साम्राज्यवाद से उपनिवेशों की प्रगति हुई है न कि उनकी संस्कृति का अपयश, साम्राज्यवाद उनके लिए सामाजिक सुधारों के साथ आधुनिकता को लेकर आया, साम्राज्यवाद को इसी रूप में देखा गया है और नए विश्व की कल्पना को जागते हुए नए आर्थिक आधार प्रदान किए हैं। ब्रिटिश साम्राज्यवाद को इसी अर्थ में देखा कि विश्व में आधुनिकता का प्रसार इसी के माध्यम से हुआ है। उनका कहना है कि नयी सोच के आधारभूत सिद्धान्तों की रचना और परिचय इसी साम्राज्यवाद के देन हैं, लेकिन एक सत्यता यह भी है कि आधुनिकता का आना समय के साथ तय था और विज्ञान के आविष्कारों ने इसे बहुत कुछ दिशा दी। वास्तव में अभिजात वर्ग की नई साजिशें साम्राज्यवाद के लिए अधिक उत्तरदायी है। ये अपनी औद्योगिकता के तहत आर्थिक लाभ और मुनाफे के लिए अपने माल को खपाना चाहता था इसी कारण साम्राज्यवाद को बढ़ावा दिया गया। उपनिवेशों में माल की खपत कराना इनका लक्ष्य था और इस लक्ष्य में वह सफल भी रहे। इनके लिए साम्राज्यवाद का महत्व है, वह एक मार्ग है जिससे वे लाभ प्राप्त कर सकें और राष्ट्रवाद इनके लिए एक हथियार था, जिन्होंने जाति, धर्म और समूह के माध्यम से अपने स्वार्थों की पूर्ति की।

मार्क्सवाद राष्ट्रवाद के संबंध में मार्क्स की विचारधारा पर आधारित है, राष्ट्रवाद को लेकर वह अपनी दृष्टि उपनिवेशवाद और पूंजीवाद के विरोध के स्वरूप में प्रतिपादित करता है। मार्क्सवाद साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद को पूंजीवाद की देन बताता है, इसका मुख्य

कारण औद्योगिक क्रान्ति को स्वीकार करता है। मार्क्सवाद हर स्तर पर साम्राज्यवादा और पूंजीवाद की निंदा करता है, उसे घातक बताता है। मार्क्सवाद वर्ग विभाजन नहीं मानता वह समस्त विश्व के मजदूरों को एक मानते हुए विश्व समुदाय में समानता की बात करता है। उसके लिए शोषक केवल शोषक है और शोषित केवल शोषित, कोई भी राष्ट्र क्यों न हो उसके लिए शोषक विरोधी और शोषित के प्रति सहानुभूति है। यदि किसी राष्ट्र में पूंजीवादी शक्तियों की सत्ता होगी तो शोषण की मात्रा बढ़ेगी और जनसमुदाय पीड़ित तथा शोषित जीवनयापन करेगा। भारत में वर्तमान में लोकतांत्रिक व्यवस्था के नाम पर पूंजीवाद की ही प्रमुख भूमिका है। स्पष्ट माना जा सकता है कि इस समय में भारत में लोकतान्त्रिक पूंजीवाद है। दिखावे के नाम पर लोकतंत्र है, लेकिन भीतर पूंजीवाद का बोलबाला ही है। जितना सहयोग पूंजीवाद के प्रसार में सरकार दे रही है उससे अर्थ का असंतुलन और अनुचित बंटवारा भारत में स्थापित हो रहा है। यहाँ भारत में एक बड़ा विरोधाभास दिखाई देता है। एक ओर मजदूर और किसानों की दशा में सुधार नहीं दूसरी ओर उन्हें बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। सरकार पूंजीपतियों के लिए कई हजार करोड़ रुपयों का कर्ज सरकार दे रही है और वसूली में नाकाम होने पर कर्ज की कुछ राशि माफ भी कर रही है, वहीं किसानों, निम्नवर्ग और मध्यमवर्गी समाज से कर्ज की वसूली में सख्ती से पेश आ रही है। ये दोहरी नीति किस प्रकार की है, इसे समझना आवश्यक है। वास्त्व में यह विरोधाभासी स्थिति ही है। राष्ट्रवादी विचारधारा मूल राष्ट्रवाद को स्वीकार करती है, जो किसी भी दशा में साम्राज्यवाद का कड़ा विरोध करती है। साम्राज्यवाद को नकारते हुए उसका प्रतिकार करना इसका लक्ष्य है। इनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है और हर कीमत पर उसकी अस्मिता और स्वतंत्रता की रक्षा को अपना कर्तव्य मानते हैं। इस प्रकार का राष्ट्रवाद भारत में स्वतंत्रता के समय देखा जा सकता है, लेकिन ऐसा राष्ट्रवाद भी उच्च कुलीन, आभिजात्य वर्ग समुदायों तक ही सीमित रहा उसमें किसान, मजदूर और निम्न जातियों के दलितों को सम्मिलित कर सहयोग की सोच खुलकर सामने नहीं आ पाई। एक विचारधारा उपाश्रित विचारधारा है, जिसमें दलित, स्त्री और आदिवासियों को देखा जा सकता है। इनका मानना है कि राष्ट्रवाद में हमें अनदेखा किया जाता रहा है और अब किसी भी कीमत पर हमें अनदेखा न किया जा सकेगा, इसलिए ये राजनीतिक सामाजिक आन्दोलनों के माद्यम से अपने अस्तित्त्व को उभारकर सामने ला रहें और राष्ट्रकी मुख्यधारा में स्थान पाते हुए राष्ट्रवाद से अपना योगदान देने के लिए प्रतिबद्धता को दर्शा रहे हैं, लेकिन इनकी प्रतिबद्धताएँ आशंकाओं से मुक्त नहीं मानी जा सकती है, क्योंकि ये जातिगत, सामुदायिक उन्तनि और विकास के लिए राष्ट्रहित का ख्याल न करके केवल अपने अधिकारों को प्राप्त करने पर केन्द्रित हैं। इन अधिकारों की प्राप्ति में वे अपने कर्तव्य और उत्तरदायित्व को नकारते हुए कहीं न कहीं वैचारिक हिंसा, विद्रोह और वाममार्ग का भी सहारा ले रहे हैं, तो राष्ट्रवाद के विपरीति दिखाई देता है।

आधुनिकता के साथ राष्ट्रवाद का अवतरण हुआ और आगे चलकर दोनों में विरोध भी स्थापित हो गया। आधुनिकीकरण जहाँ आर्थिक बदलाव लाया वहीं वह राजनीतिक परिवर्तनों का दौर भी लाया। राष्ट्रवाद ने आधुनिकीकरण से अपना विरोध तब जताया जब वह राष्ट्र की सीमा, जाति, धर्म को तोड़ता हुआ व्यापारिक समझौतों और आर्थिक क्षेत्र में नयी पहल के सामने लाता है। भारत में राष्ट्रवाद में कई बार सरकारों के परिवर्तन ने मुस्लिम राष्ट्रों से व्यापारिक संबंध में या तो देरी लगाई या बहुत शिथिल प्रयास किए गए। इसी कारण राष्ट्रीय उद्योगीकरण और आर्थिक समृद्धि की प्रक्रिया की गति धीमी रही है। राष्ट्रवाद पश्चिम की उपज है यह स्पष्ट है, पश्चिम के राष्ट्रवादी विचारकों का मानना है कि पूर्वी राष्ट्रवाद में पश्चिमी राष्ट्रवाद जैसे मूल्यों की कमी है। कुछ विचारक पश्चिमी राष्ट्रवाद को राजनीतिक विचारधारा पर आश्रित मानते हैं और पूर्वी राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक साम्प्रदायिक। वास्तव में दोनों का अन्तर अपने समय में उपजी विचारधाराओं में संस्कृतिक तत्वों का गहराई से समावेश है। पश्चिम का राष्ट्रवाद अधिक विचारधारा आश्रित, तर्कसंगत और मूल्यरादी है, जबकि पूर्व का

आप अपनी रचनाएं भेजें

48/49 -A स्वीस पार्क,
कोलकाता- 700 033
☎ : 9231845289, 2470-4061,
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

राष्ट्रवाद का परिदृश्य अधिक भावुक, संस्कृतिक और ऐतिहासिक अस्मिताओं से युक्त विविधता वाला है। बहरहाल वर्तमान में राष्ट्रवाद का परिदृश्य स्पष्ट किया जाए तो कहा जा सकता है कि राष्ट्रवाद की सीमाओं का टूटना स्वाभाविक है, उत्तर आधुनिकता के इस दौर में जहाँ उदारवाद, भूमंडलीकरण और डिजिटल युग ने नए प्रकार के विश्व की नई संकल्पना को सामने लाकर खड़ा कर दिया तो राष्ट्रवाद जैसा विचार भी अब संकुचित रूप से दृष्टव्य होने लगी है। भूमंडलीकरण ने राष्ट्रवाद को चुनौती दी है, सदी के हस्तांतरण ने आज के मनुष्य को एकसा बनाने का प्रयास किया है। जहाँ आवागमन की सुविधा ने समस्त राष्ट्रों को एक कर दिया है वहीं वह विभिन्न राष्ट्रों के लोगों के बीच समन्वय स्थापित कर रहा है। आज इन्टरनेट ने और विज्ञान के नवीन आविष्कारों ने एक संस्कृति, भाषा इतिहास को समझने की बहुत बड़ी गुंजाइश प्रदान की है, जिससे किसी अन्य राष्ट्र की संस्कृतिक, ऐतिहासिक परम्परा को समझने के साथ उसकी विचारधारा को शीघ्रता से समझना संभव हुआ है। आज कम से कम एक भाषा या साझा संस्कृति की भावना का तो विकास हुआ है। अब विभिन्न राष्ट्र की सीमाओं के कोई विशेष अर्थ नहीं रह गए हैं। किसी भी देश में जाकर वहाँ की शर्तों को पूर्ण करके वहाँ की नागरिकता को आसानी से ग्रहण किया जा सकता है। आज संगीतकार, गायक अदनान सामी का उदाहर लिया जा सकता है कि हाल ही में उन्हें भारत की नागरिकता मिली है। आज डिजिटल युग में फोन, ई-मेल, सोशल मीडिया, जैसी प्रौद्योगिकी से कई मानसिक,आर्थिक वैचारिक परिवर्तन सम्पूर्ण विश्व में देखे जा सकते हैं। इस प्रकार की सुविधा ने जहाँ विश्व की दूरियाँ कम की हैं वहीं आपसी समझ को अधिक विकसित करते हुए उन्हें अधिक उदार तथा समन्वय से युक्त एक विश्व की कल्पना से बांध दिया है, लेकिन दूसरी ओर बहुत बड़ा खतरा बनाकर भी उपस्थित हुआ है। भाषा, संस्कृति और विचारधारा पर वर्तमान के राष्ट्रों पर इन साधनों ने बहुत गहरा प्रभाव डाला है। साथ ही बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने दूसरे राष्ट्रों में अपनी आर्थिक समृद्धि के लिए खुली व्यापार नीति के तहत कंपनियाँ स्थापित की हैं और वहाँ कई राष्ट्रों के अधिकारी, कर्मचारी आपसी सहयोग से कार्य करते हुए जीवन जी रहे हैं। आज भूमंडलीकरण और इन्टरनेट के समय ने राष्ट्रवाद को दूसरी तरफ आंतरिक रूप में प्रबल भी किया है, जो पिछड़ेपन के शिकार थे, दरिद्रता में फंसे हुए हैं उनको उजागर करने के साथ उन्हें समता भी प्रदान की है। यूरोप में जहाँ से राष्ट्रवाद का उदय हुआ था आज वो ही राष्ट्रावाद के महत्व को कम मान रहा है, उसके स्थान पर एक विश्व की कल्पना कर रहा है। यूरोप में जिन तत्वों को लेकर राष्ट्रवाद का उदय और विकास हुआ वे आज के दौर में कमजोर पड़ रहे हैं या नव्यवैचारिकता के प्रतिस्थापन्न की मांग कर रहे हैं। अब राष्ट्रवाद विश्व पटल पर आर्थिक समृद्धि नए पक्ष के साथ उभरा है और उसने अपना अस्तित्व दर्शाया है। वैश्विक राजनीति के साथ आर्थिक संबंधों का बहुत अधिक महत्व भविष्य में रहेगा, क्योंकि राष्ट्रों की समृद्धि ही भविष्य का मजबूत आधार सिद्ध होगी। जो राष्ट्र अब भी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक-साम्प्रदायिक, भाषाई अस्मिता के गौरव, अभिमान, कट्टरता से ग्रसिते हैं, जो अब भी गृह-कलह में उलझे हुए हैं, जो अब भी आतंकवाद, अलगाववाद को अपना लक्ष्य बनाए हुए हैं और आने वाले समय को नहीं पहचान रहे हैं वो पिछड़े सिद्ध हो जाएंगे, क्योंकि आने वाला समय एक विश्व की पुनर्संरचना को केन्द्रित करते हुए आपसी प्रतिस्पर्धा को महत्व देंगे। लेकिन वर्तमान समय में राष्ट्रवाद की अपनी शक्ति में बहुत अधिक कमजोर नहीं हुई है, यह एक ऐसी विचारधारा है, जिसका तिरोहण धीरे-धीरे होगा, खासकर भारत का राष्ट्रवाद बहुत धीमी गति से अपनी सीमाओं से बाहर हो पाएगा, क्योंकि वहाँ बहुलता की संसक्ति के साथ भाषा की विविधता और जातीय, धार्मिक,सांप्रदायिक अस्मिताओं का गहरा संघर्ष मौजूद है।

–साभार : आलोक रंजन

विज्ञापन दरें :

पूरे देश के लिए एक समान

साईज		रु०
पूरा पेज	-	8000
आधा पेज	-	5000
एक चौथाई	-	3000

1 कॉ. × 1 से.मी. 250

पृष्ठ 1 का शेषांश

हम नेपाल के साथ ....

वर्ग-ध्रुवीकरण की गति तेज हो जायेगी और आधुनिक औद्योगिक सर्वहारा वर्ग का तेजी से विस्तार होगा। नेपाल का पूँजीवादी रूपान्तर साम्राज्यवादी शक्तियाँ भी चाहती हैं (क्योंकि नेपाल में प्राक-पूँजीवादी अवशेषों की समाप्ति और राष्ट्रीय बाजार के सुदृढ़ीकरण के बाद ही वहाँ नव-उदारवाद की नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है) और नेपाल का पूँजीपति वर्ग भी यही चाहता है। इस काम को मौजूदा वाम गठबन्धन की सरकार नेपाली कांग्रेस से अधिक प्रभावी ढंग से कर सकती है, इसलिए वाम गठबन्धन के सत्तारूढ़ होने से, चीन ही नहीं, बल्कि दुनिया की अन्य साम्राज्यवादी शक्तियों को भी कोई आपत्ति नहीं, बल्कि खुशी ही है। भारत के शासक वर्ग की नाखुशी का कारण नेपाल में उनके हितों का सिकुड़ना है।

वाम गठबन्धन क्रमिक गति से ऊपर से पुराना भू-स्वामियों को रियायते देते हुए ही सही, लेकिन बुर्जुआ भूमि-सुधार के बचे हुए कामों को भी पूरा करने के लिए बाध्य होगा, क्योंकि श्रम के सामन्ती बन्धनों से मुक्ति के बिना पूँजीवाद राष्ट्रीय बाजार का निर्माण सम्भव नहीं होगा। इस तरह नेपाल का पूँजीवाद के रास्ते पर तेजी से आगे बढ़ना अपरिहार्य हो गया है। कहा जा सकता है कि बुर्जुआ जनवादी क्रान्ति के बचे-खुचे कार्यों को पूरा हो जाना सुनिश्चित हो जाने के साथ ही नेपाल का अब नयी समाजवादी क्रान्ति (साम्राज्यवाद-विरोधी पूँजीवाद-विरोधी क्रान्ति) की मंजिल में प्रविष्ट होना सुनिश्चित हो चुका है। इस गति को न तो रोका जा सकता है और न ही वापस घुमाया जा सकता है।

अब हम इस नये बदलाव के विचारधारात्मक पक्ष की ओर आते हैं। *वाम गठबन्धन की भावी सरकार संसदीय मार्ग से बुर्जुआ जनवादी क्रान्ति के बचे-खुचे कार्यभारों को तो पूरा कर ही लेगी (सरकार आगे नेपाली कांग्रेस या किसी और गठबन्धन की भी बने, तो उसे यह काम करना ही होगा) लेकिन इसके साथ ही नेपाल भूमण्डलीकृत विश्व-अर्थतंत्र के साथ ज्यादा आर्गेनिक ढंग से जुड़ जाएगा और उसकी वैसी ही दशा कालान्तर में होगी जो लातिन अमेरिका और अफ्रीका के कई पिछड़े पूँजीवादी देशों की आज है। इससे बचना तभी सम्भव होता, यदि बुर्जुआ जनवादी क्रान्ति के कार्यभार का क्रान्तिकारी तरीके से पूरे किये जाते और फिर वहाँ समाजवादी संक्रमण की शुरुआत हो जाती। लेकिन क्रान्तिकारी वाम के संशोधनवादी विपथ-गन के चलते नेपाल ने वह अवसर खो दिया।*

संसदीय मार्ग से पूँजीवादी जनवादी क्रान्ति के कार्यभारों को तो पूरा किया जा सकता है, लेकिन समाजवाद की दिशा में संक्रमण कदापि नहीं किया जा सकता। न मार्क्सवाद की विचारधारा इसके पक्ष में गवाही देती है, न ही दुनिया का इतिहास। इसलिए हमारा यह स्पष्ट और दृढ़ मत है कि नेपाल के क्रान्तिकारी वाम आन्दोलन को विगत एक दशक के दौरान भारी धक्का लगा है। ने.क.पा. (ए-मा-ले) तो पहले से ही देङ-शाओ-पिङ के "बाजार समाजवाद" और खुश्चेवी शान्तिपूर्ण संक्रमण के मार्ग की राही रही है। मदन भण्डारी के समय ही यह पार्टी बहुदलीय जनवाद की बात करते हुए सर्वहारा अधिनायकत्व की लेलिन वादी अवधारणा को छोड़ चुकी थी। प्रचण्ड की पार्टी ने भी एक दशक से भी अधिक पहले समाजवादी संक्रमण के दौरान बहुदलीय शासन-प्रणाली की अवधारणा प्रस्तुत करके वही राह पकड़ ली थी। लेकिन कम राजनीतिक चेतना के कारण कतारों में फिर भी लम्बे समय तक विभ्रम बना रहा। अब लेकिन विभ्रम का कुहासा काफी हद तक छँट चुका है। *ने.क.पा. (माओवादी केन्द्र) का विचाराधारात्मक विचलन पूरी पार्टी के निचले स्तर के नेतृत्व और कतारों के एक हिस्से तक भ्रष्ट राजनीतिक-सामाजिक-व्यक्तिगत आचरण के रूप में प्रकट होने लगा है। पार्टी ढाँचे का क्रान्तिकारी चरित्र तबाह हो चुका है, सदस्यता एकदम चवन्निया हो गयी है,* 4000 *लोगों की (!!!) तो केन्द्रीय कमेटी है, नयी कतारों की राजनीतिक शिक्षा का स्तर शून्य है और उनमें असामाजिक तत्व भी घुस गये हैं। अब ने.क.पा (ए-मा-ले) से एकता के फैसले की घोषणा के बाद ने.क.पा. (माओवादी केन्द्र) के "माओवाद" का पूरा पर्दाफाश हो चुका है। संसदीय वाम बुर्जुआ जनवाद की दूसरी सुरक्षा पंक्ति का काम करता है, लेकिन नेपाल में तो इसने अपनी वफादारी इस कदर प्रमाणित की है कि पहली सुरक्षा-पंक्ति बन गया है।*

समस्या यह है कि प्रचण्ड को संशोधनवादी कहते हुए अलग राह लेने वाले किरण वैद्य या विप्लव जैसे लोगों से भी कोई उम्मीद

नहीं है। अतीत में ऐसी तमाम पार्टियों के नेतृत्व ने अवसरवाद, उदारतावाद या बचकानेपन का परिचय दिया है। इनके व्यवहार का अनुमान नहीं लगाया जा सकता और इनका भविष्य संदिग्ध है। न तो इन संगठनों में नेपाल के क्रान्तिकारी वाम का नया केन्द्र बनाने की सामर्थ्य है, न ही उन तमाम अपरिपक्व छोटे-छोटे संगठनों में जो संशोधनवाद के विरोध और माओवाद/माओ विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता का अनुष्ठानिक दावा करते रहते हैं। इस मायने में नेपाल के कम्युनिष्ट क्रान्तिकारी आन्दोलन को एक ऐतिहासिक धक्के का सामना करना पड़ा है।

बहुत सारे भावुकतावादी कम्युनिष्टों ने संशोधनवादी वाम गठबन्धन की भारी जीत से यदि कुछ ज्यादा ही उम्मीद पैदा हो गयी है तो यह अच्छी बात नहीं है क्योंकि मिथ्या उम्मीद नाउम्मीदी से भी बुरी चीज होती है। एक अच्छी बात यह है कि संघर्षों में तपी-मंझी नेपाल की कम्युनिष्ट कतारों का एक अच्छा-खासा हिस्सा इस बात को समझता जा रहा है और आने वाले दिनों में इसे वह और बेहतर तरीके से तथा और तेजी से समझेगा। नेपाल में कम्युनिष्ट आन्दोलन की जड़ें बहुत गहरी हैं और अभी भी विभिन्न संगठनों में कर्मठ क्रान्तिकारी कतारों की संख्या बहुत विशाल है। मौजूदा कोई भी सांगठनिक केन्द्र इन्हें ऐक्यबद्ध करने और नेतृत्व देने की क्षमता नहीं रखता।

लेकिन कतारों के बीच से किसी नयी क्रान्तिकारी पहल और किसी नए क्रान्तिकारी केन्द्र के उदय की संभावनाओं से इनकार नहीं किया जा सकता। बल्कि भविष्य तो इसी दिशा में इंगित कर रहा है।

–साभार : आलोक रंजन

लेखन और प्रकाशन पर संगोष्ठी

कला और साहित्य के केन्द्र कलकत्ता में 23 दिसम्बर, 2017 की शाम भारत सभा हाल में एक अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का सफल आयोजन सदीनामा की ओर से किया गया। विषय था "लेखकन और प्रकाशन : कल और आज" कार्यक्रम का शुभारंभ लेखिका डॉ० इन्दू सिंह की पुस्तक "यही सबकी गति" के लोकार्पण से हुआ। आयोजन के मुख्य वक्ता रहे डॉ० अभिजीत पॉल, रावेल पुष्प, डॉ० गीता दुबे, जितेन्द्र धीर, रणजीत संकल्प, जितेन्द्र जितांशु, सेराज खान बातिश। साथ ही श्रोता वर्ग में उपस्थित नजर आये कलकत्ता के कई परिचित लेखक, शिक्षक तथा शोधार्थी। रावेल पुष्पजी ने पुराने जमाने के लेखक की बात करते हुए काफी लोगों की ओर ध्यान आकर्षित किया साथ ही ये भी कहा कि छोटे-छोटे पत्र पत्रिकाओं में छपते-छपते ही कोई बड़ा लेखक बनता है इस दौरान जो सबसे बड़ी चीज है यह है कि लेखक को प्रोत्साहित करना। इसके बाद बातिश ने वर्तमान में प्रकाशित हो रहीं हस्तलिखित पत्रिकाओं की बात कही कि क्या कारण है कि लेखक आज प्रकाशन से दूर होकर हस्तलेखन की ओर बढ़ रहा है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए जितेन्द्र जितांशुजी ने कहा कि प्रकाशन का गणित है समझने और उस गणित से बचने की जरूरत है। धीर ने चर्चा को एक रोचक मोड़ देते हुए कहा कि सोशल मीडिया पर कविता कहानी के लेखन से सम्पादक नाम की चीज को बाहर रख दिया। साथ ही ये समस्या है कि लेखक सम्पादक आपस में सहयोगी नहीं बनना चाहते हैं। अभिजीत पॉल ने लेखक को उसके स्वभाव के प्रति जिम्मेदारी का एहसास कराया है तो वहीं रणजीत संकल्प ने कहा कि लेखक के केन्द्र में व्यवसाय हो ना हो प्रकाशन के केन्द्र में केवल और केवल व्यवसाय आ गया है, उन्होंने आगे कहा कि लेखक व्यवसायी नहीं हो सकता तथा प्रकाशक लेखक नहीं हो सकता इसलिए एक दूसरे की समस्या तथा मानसिकता को नहीं समझ पाते संकल्पजी ने कहा कि स्वयं को लेखक तब मानिये जब आप तुलसी की तरह ही जाते तथा कबीर की तरह सुने जायें। डॉ० गीता दूबे ने अपने वक्तव्य में कहा कि प्रश्न ये है कि हम पहले तय करें कि हम लिख क्यों रहे हैं। प्रकाशन की बात तो बाद में है पहले लेखक के लिए वर्कशॉप होना चाहिए। ये जो लेखन और प्रकाशन का खेल है पूराना छद्म और षड़यंत्र है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ० मानबहादुर सिंह, मिनाक्षी सांगानेरिया, रश्मि भारती, पंकज सिंह, डॉ० कमलेश जैन सुलोचना सारस्वत आदि ने सक्रिय योगदान दिया, यह रपट रश्मि भारती ने लिखी।

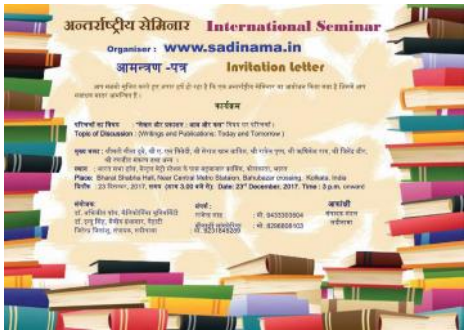

ISSN : 2454-2121
R.N.I. No. WBHIN/2000/1974
Central Govt. Postal Regn. No. TECH/WB/RNP/SP-003/2014-16

1 से 31 जनवरी, 2018
कुल पेज : 24

मूल्य : 5.00
सदीनामा
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

कलामन्दिर में मारवाड़ी सम्मेलन का 83वां स्थापना दिवस का कार्यक्रम सम्पन्न

25 दिसम्बर 2017 को मारवाड़ी सम्मेलन का 83 वाँ स्थापना दिवस मनाया गया। उसमें मुख्य अतिथि के तौर पर पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी और राज्यपाल केसरीनाथ त्रिपाठी थे। अध्यक्ष प्रह्लाद राय अग्रवाल थे जो कि इस समय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। राष्ट्रपति ने कहा बंगाल में मारवाड़ी और बंगाली एक हैं जबकि राज्यपालजी ने कहा कि घनश्यामदास बिड़ला जमुनालाल बजार, राममनोहर लोहिया सहित कईयों का योगदान अतुलनीय है। साथ में सीतारामजी शर्मा सांसद विवेक गुप्ता विशिष्ठ अतिथि के रूप में मौजूद थे। संतोष सराफ ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। इस समय दो साहित्यकारों को साहित्यिक सम्मान दिया गया। नीरज दइया को सीताराम रूंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया बाल-साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया सुनीता लोहिया व टीम द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रगान में कार्यक्रम का शुभारम्भ एवं समापन हुआ। राजस्थानी लोक गीत और नृत्य का भी आयोजन किया गया था। इस मौके पर नन्दलाल रूंगटा, डॉ० हरिप्रसाद कानोडिया, जे.के.सराफ, हरिप्रसाद बुधिया, कुंज बिहारी अग्रवाल, आत्माराम सोंथलिया, रामअवतार पोद्दार, कैलाशपति तोदी, रतन शाह, नन्दलाल शाह, अरुण मल्लावत, संजय हरलालका, नन्द किशोर अग्रवाल अशोक जालान, प्रकाश किल्ला, पवन सराफ, इत्यादि कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। संचालन शिवकुमार लोहिया ने किया। उक्त अवसर पर समाज विकास पत्रिका का विमोचन किया गया।

-रिपोर्ट : मिनाक्षी सांगानेरिया

प्रकाशन प्रभार

राजेश्वर राय • मीनाक्षी सांगानेरिया •मारिया शमीम

With best compliments from :

GOLDEN
Machinex Corporation

Regd. Office : 194/3, G.T. Road (North) Salkia
Howrah-711 106, West Bengal
Ph : 2655-7582, 2655-7835
Fax : (91) (033) 2655-7835/2211-5035

Showroom : 7, Ganesh Chandra Avenue
Kolkata- 700013
Ph. : 2237-2835, 2237-8896

Website : www. goldenmachinery.com

E-mail : mail@goldenmachinery.com

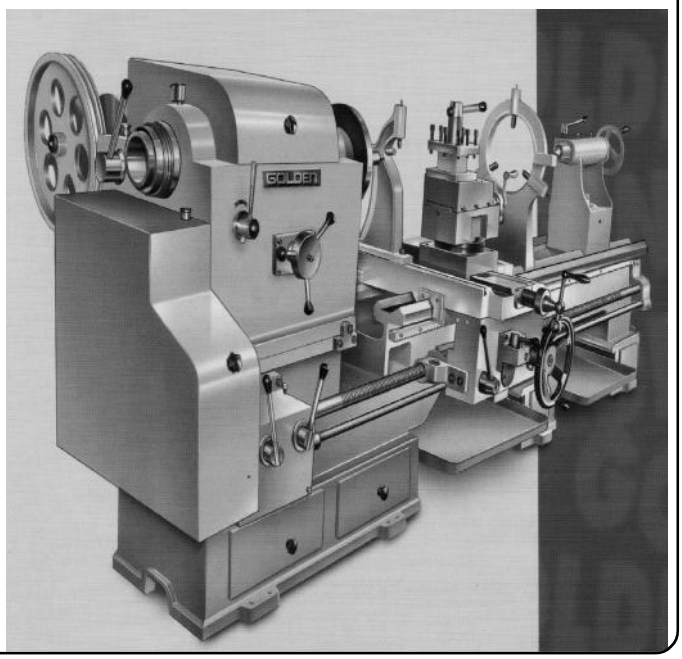

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी सोनिया शर्मा द्वारा डायमंड आर्ट प्रेस, 37 ए, बैंटिक स्ट्रीट, कोलकाता-69 से मुद्रित तथा H-5, Govt. Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-700137, 24 Pgs. (S), W.B. India से प्रकाशित ।
संपादक : जितेन्द्र जितांशु, ☎ : 9231845289, E-mail : jjitanshu@yahoo.com,R.N.I. No. WBHIN/2000/1974